thearyasamaj.org

ओ३म्

संश्रुतेन गमेमहि मा श्रुतेन विराधिषि
परोपकारिणी
दयानन्दसरस्वती

पाक्षिक

परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष - ५७ अंक - ४ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र फरवरी (द्वितीय) २०१५

महर्षि दयानन्द सरस्वती

thearyasamaj.org

बोध रात्रि (१७ फरवरी)

thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द सरस्वती की
उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा
का मुख पत्र

वर्ष : ५७ **अंक** : ४
दयानन्दाब्द: १९०
विक्रम संवत्: फाल्गुन कृष्ण, २०७१
कलि संवत्: ५११५
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११५

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-
भारत में
वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

विदेश में
वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षत्र अजमर ही होगा।

ओ३म्

विद्याविलाससमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९/५९

परोपकारी

फरवरी द्वितीय २०१५

अनुक्रम

१. हिन्दी को समाप्त करने का षड़यन्त्र	सम्पादकीय	०४
२. अविद्या क्षेत्रमुत्तरेषां प्रसुप्ततनु......	स्वामी विष्वङ्	०७
३. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	१५
४. अवतारवाद का अन्त होगा?	रामनिवास गुणग्राहक	१९
५. पुस्तक-समीक्षा	डॉ. धर्मवीर	२२
६. वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन		२४
७. ऊमर काव्य	ऊमरदान लालस	२७
८. जिज्ञासा समाधान-८१	आचार्य सोमदेव	३१
९. स्वामी विवेकानन्द का हिन्दुत्व	नवीन मिश्र	३५
१०. स्तुता मया वरदा वेदमाता-४		३७
११. संस्था-समाचार		३८
१२. आर्यजगत् के समाचार		४१

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

thearyasamaj.org

हिन्दी को समाप्त करने का षड्यन्त्र

पिछली सरकारों ने हिन्दी-संस्कृत को योजनाबद्ध रूप से समाप्त करने का कार्य किया। मोदी सरकार के आने से यह षड्यन्त्र अधिकारिक रूप से तो हट गया, परन्तु पिछले साठ वर्षों से जो इस कार्य में लगे हुए थे और आज भी शासन में प्रमुख पदों पर बैठे हैं, उनकी तड़प समझी जा सकती है। वे आज आदेश निर्देश की भाषा छोड़कर परामर्श व समझदारी के बहाने हिन्दी को समाप्त करने के अपने प्रयास को बढ़ाने लगे हैं। मनमोहनसिंह के प्रधानमन्त्रीत्व काल में हिन्दी के बिगाड़ का सर्वाधिक सरकारी प्रयास हुआ। मनमोहनसिंह की सरकार में हिन्दी के प्रयोग के लिए तीन ऐसे व्यक्ति उत्तरदायी थे जो हिन्दी के विरोधी तो है ही,

परन्तु उनको हिन्दी आती भी नहीं थी, उनमें प्रथम मनमोहनसिंह स्वयं थे। वे उर्दू, अंग्रेजी पढ़े होने से उनका हिन्दी भाषण सदा उर्दू में लिखा होता था, जिसे वे लालकिले से लेकर सम्मेलनों तक में पढ़ते थे, अन्यथा उनकी भाषा मन-वचन-कर्म से अंग्रेजी थी। दूसरी थी सोनिया गाँधी, जिन्हें हिन्दी नहीं आती थी और वे अपना हिन्दी भाषण रोमन में लिखकर पढ़ती थीं, यह उनका भाषा का प्रेम नहीं, विवशता थी। तीसरे व्यक्ति थे चिदम्बरम, जिन्हें हिन्दी से चिढ़ थी। वे हिन्दी में न भाषण देते थे न बातचीत ही करते थे। चिदम्बरम को हिन्दी का महत्त्व चुनाव में याद आया यदि वे हिन्दी में भाषण दे सकते तो वह भी प्रधानमन्त्री पद के प्रत्याशी होते। इन्हीं चिदम्बरम के गृहमन्त्रीत्व काल में श्री मनमोहनसिंह की अध्यक्षता में संविधान के विपरीत जाकर हिन्दी में उर्दू और अंग्रेजी शब्दों को भरने की छूट दी गई। इन्हीं के कारण हिन्दी स्वरूप बिगाड़कर दूरदर्शन और समाचार पत्रों में हिन्दी के स्थान पर उर्दू, अंग्रेजी के शब्दों का और हिन्दी को रोमन में लिखने का देशद्रोही प्रयास प्रारम्भ हुआ। आज सारे समाचार पत्र और दूरदर्शन ऐसे काम करते हैं जैसे सारे भारतीयों को अंग्रेजी भाषा और रोमन लिपि सिखाने का ठेका इन्हीं ने ले रखा है। सरकार के स्तर पर यह अभियान भले ही ठण्डा पड़ गया हो परन्तु सरकारी विद्वान् और तथाकथित विद्वान् अंग्रेजी के प्रभाव को बनाये रखने और उसकी गुणवत्ता सिद्ध करने में लगे हुए हैं। स्वतन्त्रता के साथ ही पराधीनता को बनाये रखने के जो निर्णय हुए उनमें सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालयों में अंग्रेजी की अनिवार्यता भी है।

सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालयों में हिन्दी के प्रयोग की माँग करने वाली जनहित याचिका का केन्द्र सरकार ने विरोध किया। जिसमें याचिकाकर्त्ता ने कहा कि अब समय आ गया है कि संविधान के अनुच्छेद ३४३ में वर्णित प्रावधानों के अन्तर्गत हिन्दी को उच्च न्यायपालिका में राजभाषा बनाया जाये।

देशभर के २४ उच्च न्यायालयों एवं सर्वोच्च न्यायालय में हिन्दी को राजभाषा बनाने का प्रस्ताव करने वाली जनहित याचिका को केन्द्र सरकार ने एक शपथ पत्र प्रस्तुत करते हुए अस्वीकार कर दिया है।

सर्वोच्च न्यायालय में यह जनहित याचिका शिव सागर तिवारी अधिवक्ता द्वारा दायर की गयी थी जिसमें कहा गया कि संविधान के अनुच्छेद ३४८ में कही गयी यह बात कि उच्च न्यायालय की राजभाषा अंग्रेजी होगी, संविधान का उल्लंघन है। यह वादी-प्रतिवादियों द्वारा नहीं समझी जाती है। इस सिलसिले में न्यायमूर्ति दत्तू और बोबड़े की खण्डपीठ ने केन्द्र सरकार को नोटिस दिया था।

इसके प्रत्युत्तर में गृह मन्त्रालय के राजभाषा विभाग ने उच्च न्यायपालिका में भाषा बदलकर हिन्दी करने का प्रस्ताव वर्ष २००४ के विधि आयोग के २१६वीं रिपोर्ट पर भरोसा करते हुए अस्वीकार कर दिया। रिपोर्ट में सांविधिक प्रावधानों का सावधानीपूर्वक विश्लेषण किया गया और इस सम्बन्ध में उच्च न्यायपालिका के वरिष्ठ सदस्यों के विचारों की ओर भी ध्यान दिया गया। इसमें कहा गया है-

''किसी भी वर्ग के लोगों पर कोई भाषा उनकी इच्छा के विपरीत न थोपी जाए क्योंकि इससे हानि होने की सम्भावना है, उच्च न्यायपालिका में न्यायाधीशों के लिए निर्णय करने की प्रक्रिया में भाषा एक महत्त्वपूर्ण कारक है। न्यायाधीशों को दोनों पक्षों की प्रस्तुति को सुनना और समझना होता है और उनके सम्यक् समायोजन के लिए कानून का प्रयोग करना होता है। उच्च न्यायपालिका में प्रायः अंग्रेजी और अमरीकन पुस्तकों एवं अभियोग विधि प्रकरणों पर आधारित है।''

इस रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि न्यायपालिका में अंग्रेजी के प्रयोग से न्यायाधीश के एक उच्च न्यायालय से दूसरे उच्च न्यायालय में स्थानान्तरण के समय सुविधा

thearyasamaj.org

रहती है और यही बात उच्च न्यायालय से सर्वोच्च न्यायालय में स्थानान्तरण के समय भी होती है।

केन्द्र सरकार ने अपने शपतथ-पत्र के अनुच्छेद ३४८ के उपभाग (२) में कही बात को सन्दर्भित किया है जिसके अनुसार राष्ट्रपति की पूर्व सहमति प्राप्त करके उस राज्य का राज्यपाल उस राज्य उच्च न्यायालय में हिन्दी के प्रयोग को अधिकृत कर सकता है।

जो मोदी शपथ मञ्च से संयुक्त राष्ट्र के मञ्च तक हिन्दी की महिमा गा रहे हैं, उनकी सरकार का विभाग हिन्दी की जड़ खोदने में लगा हुआ है। यह एक दासता का पोषक और देश के लिये लज्जित करने वाला कार्य है। मोदी सरकार को इस घटना का संज्ञान में लेकर तत्काल इसका सुधार करना चाहिए।

इस प्रकार का प्रयास अनेक स्तर पर चल रहा है। इसको इस बात से समझा जा सकता है कि पिछले दिनों दैनिक भास्कर समाचार पत्र में एक प्रसिद्ध स्तम्भ लेखक ने बड़े ही भोलेपन से हिन्दी को रोमन में लिखने का प्रस्ताव कर डाला। लेखक बड़ी दूर की कौड़ी लाया है, वह कहता है- अंग्रेजी बिना प्रोत्साहन के बड़ी तेजी से बढ़ रही है, उससे टक्कर लेने के लिए एक ही उपाय है- हिन्दी को रोमन में लिखा जाय। सम्भवत: लेखक समझता है कि हिन्दी रोमन में लिखते ही हिन्दी अंग्रेजी बन जायेगी जैसे भारतीय पेण्ट पहनकर अंग्रेज हो गये। लेखक का विचार है कि हम नवयुवकों पर हिन्दी थोपते हैं वह विद्रोह करता है ऐसे में हिन्दी को बचाने के लिए हिन्दी को रोमन में लिखना चाहिए। यह एक विडम्बना की बात है, आप कहते हैं नवयुवक हिन्दी के प्रति विद्रोह का भाव रखता है। मूल बात है आपने उसे हिन्दी सिखाई नहीं, वह हिन्दी नहीं बोलता या हिन्दी नहीं जानता, इसमें उसका क्या दोष? जब अंग्रेजी जो उसकी भाषा नहीं है वह आप उसे सीखने के लिए बाध्य करते हैं तो वह सीख जाता है, फिर वह हिन्दी नहीं सीख सकता- यह कथन तो इस देश के युवा का अपमान है। मोबाइल, कम्प्यूटर पर वह अंग्रेजी का उपयोग करने के लिए विवश है। यदि सरकार चाहती तो प्रारम्भ से ही हिन्दी का विकल्प दे सकती थी परन्तु सरकार हिन्दी को समाप्त कराना चाहती थी, इसलिये युवकों ने अंग्रेजी सीखली। इसमें सरकार दोषी है, युवक नहीं।

आज हिन्दी को रोमन में लिखकर आप क्या अनुभव कराना चाहते हैं? यदि आप हिन्दी रोमन में लिखते हैं और हिन्दी के स्थान पर अंग्रेजी उर्दू के शब्दों का उपयोग करते हैं तो इसके पीछे केवल दो कारण हो सकते हैं। पहला आपकी दृष्टि में नागरी लिपि या हिन्दी शब्दों में आपके भावों को अभिव्यक्त करने की क्षमता नहीं है या आप उन शब्दों से परिचित नहीं हैं। दूसरा कारण है आपको अपनी भाषा और लिपि का प्रयोग करने में शर्म का अनुभव होता है। तीसरा तो कोई कारण हो नहीं सकता। लेखक ने ऐसे देशों का उदाहरण दिया है जिन्होंने अपने देश से अपनी लिपि को विदाई देकर अपनी भाषा को रोमन लिपि दी। लेखक को यह ध्यान नहीं है कि संसार की लिपियों में नागरी लिपि तथा भाषाओं में संस्कृत भाषा सबसे अधिक वैज्ञानिक है। वैज्ञानिक और समर्थ भाषा व लिपि को छोड़कर अवैज्ञानिक लिपियों की वकालत करना अपनी अज्ञानता को ही प्रकाशित करना है। जो लोग अंग्रेजी की वकालत करते हैं वे भूल जाते हैं कि अंग्रेजी को बढ़ाने और भारतीय भाषाओं को नष्ट करने के जितने प्रयत्न इन साठ वर्षों में सरकार द्वारा किये गये हैं उसका दसवाँ हिस्सा भी भारतीय भाषाओं के लिये किया होता तो आज इस देश का युवक ज्ञान-विज्ञान सीखने में कितना आगे बढ़ चुका होता, यह एक वैज्ञानिक देश बन चुका होता।

आज भाषा के पढ़ने की बात भाषा की योग्यता नहीं है अपितु भाषा को आजीविका से जोड़ना है। आज अंग्रेजी पढ़ने वाले को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है और अंग्रेजी पढ़े-लिखे को आजीविका के अवसर अधिक सुलभ हैं इसलिये अंग्रेजी पढ़ी जाती है। यह भाषा न तो वैज्ञानिक, न सरल, न हमारे लिए किसी तरह का गौरव देने वाली है। हम समझते हैं कि अंग्रेजी पढ़कर यूरोप अमेरिका में सुविधा से काम कर सकते हैं, बहुत धन कमा सकते हैं, यह बात मान कर उन्हें यूरोप में बसाना चाहते हैं पर बाहर जाने वालों की कितनी भी बड़ी संख्या हो वह भारत की जनसंख्या का एक दो प्रतिशत ही तो हो सकती है। फिर अठानवे प्रतिशत लोगों का गला क्यों घोट रहे हैं? प्रतिभा का विकास जो मातृभाषा में होता है, वह विदेशी भाषा में कभी नहीं हो सकता, फिर भी हम स्वयं पर अत्याचार करने के लिये विवश हैं। यह दासता हम क्यों नहीं छोड़ना चाहते। जो लोग आज हिन्दी को रोमन में लिखकर वैश्विक बनना चाहते हैं उनके लिये कभी विनोबा भावे द्वारा दिये परामर्श का स्मरण करना चाहिए। विनोबा भावे ने आज से पचास वर्ष पहले कहा था हमें एशिया महाद्वीप की भाषाओं को नागरी लिपि देने का प्रयास करना चाहिए। इससे पूरे एशिया महाद्वीप को मजबूत बना

hearyasamaj.org

सकते हैं और यूरोप को टक्कर दे सकते हैं। ये अन्तर है सोच का। एक व्यक्ति अपने गौरव को विश्व में स्थापित करने का इच्छुक है, एक भिखारी बनकर सेठ के साथ दिखना चाहता है। स्तम्भकार मनमोहनसिंह की सोच को आगे बढ़ाने के लिए तत्पर दीखता है। इस षड़यन्त्र को समझने के लिए एक प्रसंग याद रखना उचित होगा। जब मनमोहनसिंह सरकार ने हिन्दी में अंग्रेजी उर्दू शब्दों को भरने की संविधान विरुद्ध योजना को स्वीकृति दी, उसकी सबसे अधिक प्रशंसा पेंगुइन प्रकाशन ने की थी। उसने करोड़ों रुपये खर्च कर सम्मेलन करके सरकार के इस प्रयास की प्रशंसा की थी, इतना ही नहीं उसने यह भी कहा था कि यह प्रयास बहुत पहले स्वतन्त्रता के साथ ही हो जाना चाहिए था। आज भी विदेशी शक्तियाँ इस देश की औपचारिक भाषा के रूप में अंग्रेजी को इस देश में स्थापित देखना चाहती हैं। यह उन्हीं का विचार और उनकी ही योजना है। हिन्दी में अंग्रेजी शब्दों की भरमार करके इसके भाषाई स्वरूप को समाप्त कर दिया जाये तथा इस देश की सभी प्रादेशिक भाषाओं को हिन्दी सहित रोमन लिपि दी जाये, जिससे इस देश की आत्मा ही समाप्त हो जाये, हम अपनी स्वतन्त्रता को भूल जाये और हमें उसका महत्त्व का कभी बोध न हो सके।

जो लोग हिन्दी की तुलना में अंग्रेजी को अधिक समर्थ और योग्य मानते हैं और देवनागरी की तुलना में रोमन का अधिक स्मरण करके उसे सक्षम समझते हैं, वे तुलना करके देखें। हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि के पीछे हजारों वर्ष का अनुभव और अनुसन्धान है। इसकी वैज्ञानिकता की तुलना करने का प्रयास करें तो उच्चारण की सटीकता और अर्थ प्रकाशन का सामर्थ्य किसी भी विश्व भाषा से अधिक है। आज जो अंग्रेजी की स्पेलिंग शुद्ध उच्चारण के लिए प्रतिष्ठा की लड़ाई लड़ते हैं, उन्हें इस अंग्रेजी से होने वाली मूर्खता का तो बोध भी नहीं होता। अभी दूरदर्शन समाचारों पर तलपदे का समाचार देते हुए। सारे अंग्रेजी पढ़े उद्‌घोषक तलपदे को तलपडे-तलपडे चिल्ला रहे थे।

रेल्वे में जितनी घोषणाएँ होती हैं, वे अंग्रेजी पढ़कर हिन्दी को भ्रष्ट करने वाली होती है- बांदीकुई को बन्दीकुई चिल्लाते हैं, घर घोड़ा को धारा धोरा हम अंग्रेजी से अनुवाद करके बोलते हैं और उससे होने वाली मूर्खता को हिन्दी के माथे पर मढ़ते हैं। इस प्रकार के प्रयत्न का बलपूर्वक विरोध करके अपनी भाषा और अपने गौरव को स्थापित करना होगा। जो अंग्रेजी का प्रयोग चाहते हैं वे उसका उपयोग कर उनपर हिन्दी न थोपी जाय परन्तु हिन्दी भाषा और भारतीय भाषा बोलने वालों पर अंग्रेजी क्यों थोपी जा रही है। इस अन्याय का निराकरण होना चाहिए। यह केवल हमारी भाषा के शब्दों में सामर्थ्य है जिसे ऋषियों ने कहा है-

एकः शब्दः सम्यक् ज्ञातः।
सुप्रयुक्तः स्वर्गे लोके कामधुक् भवति।।

- धर्मवीर

अच्छी कामना करें

- मोहनचन्द तंवर

निर्भय, निर्मल, निर्विकार व संशयहीन बने जीवन,
द्वेषरहित, सद्‌भाव, विनयव्रत, दुर्विषय हीन बने जीवन,
दुराग्रही, लपट, लोभी ना वंचक दीन बने जीवन,
जन्मदाता, पालनकर्ता ना स्वार्थ लीन बने जीवन।
जो भी जीवन में पाया वो बांट चूंट निर्वाह करें,
स्वाभिमानमय हो जीवन ना मृत्यु की परवाह करें,
धनदौलत, सुख, सम्पन्नता की इतनी भी ना चाह करें,
रोग, शोक, निर्धनता दुर्दिन में भी हम ना आह करें।
रुढ़ी की हम छोड़ लकीरें, नव पथ का निर्माण करें,
लक्ष्य बने सटीक हमारा तन धनुष मन बाण करें,
अन्याई, अत्याचारी के मनसूबे निष्प्राण करें,
दलितदीन दुःखियों वंचित को भय से मिल हम त्राण करें।
संप्रदाय की गिरें दीवारें एक सत्य का सूर्य उदय हो,
हो प्रकाश जन-जन के मन में अंधकार का प्रतिपल क्षय हो,
विश्वासों की लिये संपदा विचरे दुनिया में निर्भय हो,
खोया गौरव पुनः प्राप्त कर आर्यवर्त तेरी जय-जय हो।
नवयुग व नवपीढ़ी खातिर चरणचिन्ह हम निर्मित कर दें,
जिन पर चल कर ये भविष्य की आशा सबको गर्वित कर दे,
करें गलित का नाश, प्राण वायु से जग आवर्तित कर दें,
जब भी मांगे राष्ट्र हंसे और अपना शीश समर्पित कर दें।
बीज बने ब्रह्मचारी और गृहस्थ श्रद्धामय कर दे तर्पण
वानप्रस्थ संचय करके संन्यासी बन कर दें वितरण
त्याग, तितीक्षा के चोले में देखें मन मन्दिर का दर्पण,
जो भी उसके पास जमा हो, वो सब जग को कर दे अर्पण।
वेदों के पथ पर चलकर उत्कर्ष तभी पा सकते हैं,
छोड़ें पोगा पंथी तो हम हर्ष तभी पा सकते हैं,
जीवन क्या? कैसे जीना? निष्कर्ष तभी पा सकते हैं,
प्रतिभा, पल-क्षण, दिन, महिने हर वर्ष तभी पा सकते हैं।

-ई-२०४, शास्त्री नगर, अजमेर

thearyasamaj.org

अविद्या क्षेत्रमुत्तरेषां प्रसुप्ततनुविच्छिन्नोदाराणाम्-४

-स्वामी विष्वङ्

पिछले अंक का शेष भाग.....

महर्षि आगे लिखते हैं-

उक्ता प्रसुप्तिर्दग्धबीजानाम-प्ररोहश्च।

अर्थात् दो प्रकार की स्थितियों में क्लेश उभरते नहीं हैं। एक स्थिति प्रसुप्त अवस्था की है और दूसरी स्थिति दग्धबीजभाव की है। इन दोनों ही स्थितियों में क्लेश कार्यरत नहीं होते हैं। उपरोक्त दोनों स्थितियों में दग्धबीजभाव की अवस्था अत्युत्तम है। ऐसी अवस्था को प्रत्येक योगाभ्यासी को प्राप्त करना चाहिए। जिसे पाकर मनुष्य अपने प्रयोजन को पूर्ण कर सकता है अर्थात् 'कृतकृत्य' हो सकता है। प्रसुप्त अवस्था, उदार अवस्था और विच्छिन्न अवस्था की अपेक्षा उत्तम है क्योंकि जिस अवस्था में लम्बे काल तक क्लेश उभरते नहीं हैं। परन्तु कभी न कभी उभरने का अवसर अवश्य रहता है। इसलिए उन क्लेशों को दग्धबीजभाव तक पहुँचाने के लिए कमजोर करना आवश्यक है। इसी कारण महर्षि आगे लिखते हैं-

तनुत्वमुच्यते-प्रतिपक्षभावनोपहताः क्लेशास्तनवो भवन्ति।

अर्थात् क्लेशों के तनुत्व के विषय में समाधान करते हुए ऋषि कहते हैं कि क्लेशों को रोकने वाले विरोधी भाव (तप, स्वाध्याय, ईश्वरप्रणिधान रूपी क्रियायोग) को अपना कर योगाभ्यासी बार-बार क्लेशों पर मानो प्रहार करता रहता है। अभिप्राय यह है कि अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश जब योगाभ्यासी को विषय भोगों की ओर प्रवृत्त करते हैं तब उस प्रवृत्ति को रोकने के लिए योगाभ्यासी तप का अनुष्ठान करता है अर्थात् एक ओर विषय अपनी ओर आकृष्ट करते हैं, तो दूसरी ओर योगाभ्यासी उनकी ओर आकृष्ट न होकर उनको सहन करता है। बहुत कुछ सहन करते हुए भी बीच-बीच में पुनः-पुनः आकर्षण उत्पन्न होने लगता है, तो विशेष रूप से स्वाध्याय करके उस प्रवृत्ति को रोके रखता है। तप, स्वाध्याय के साथ-साथ ईश्वरप्रणिधान करते हुए पूर्ण रूप से विषय भोग के आकर्षण को रोक देता है।

उपरोक्त प्रक्रिया से बार-बार क्रियायोग का अभ्यास कर-करके योगाभ्यासी पाञ्चों क्लेशों को कमजोर बना देता है। इस कमोजरपन को ही सूत्रकार व भाष्यकार '**तनु**' शब्द से कथन करते हैं। क्लेशों की तनु अवस्था क्रियायोग पर निर्भर करती है अर्थात् जिस प्रतिशत में क्रियायोग का पालन योगाभ्यासी करता है उसी अनुपात में क्लेश तनु होते हैं। क्लेश तनु होकर भी कार्यरत होते हैं। हाँ, जिस प्रकार बिना तनु वाले क्लेश जिस तीव्रता से कार्य करते हैं। उसी तीव्रता से तनु वाले क्लेश कार्य नहीं करते हैं परन्तु कार्य तो करते ही हैं। इसलिए क्लेशों को इतना कमजोर बनाना चाहिए कि वे कार्य करने में असमर्थ हो जाये। यहाँ पर कोई यह न समझे कि यदि कार्य करने में असमर्थ होते हैं, तो तनु और दग्धबीजभाव में क्या अन्तर रहेगा? इसका समाधान यह है कि तनु वाले क्लेश यद्यपि कार्य करने में असमर्थ हैं परन्तु कभी भी अपने कमजोरपन से उभर कर बलवान् बन सकते हैं और पुनः कार्यरत हो सकते हैं। परन्तु दग्धबीज वाले क्लेश भी कार्य करने में असमर्थ होते हैं, किन्तु वे कभी भी कार्यरत नहीं हो सकते हैं। क्यों? क्योंकि उनमें कार्य करने का सामर्थ्य सर्वथा दग्ध=जल गया है। वे कभी अंकुरित नहीं हो सकते। जिसप्रकार जले-भुने हुए चने अंकुरित नहीं होते हैं उसी प्रकार जले-भुने हुए क्लेश कभी कार्यरत नहीं हो सकते। इसलिए तनु और दग्धबीजभाव, इन दोनों में कार्यरत न होने की समानता होते हुए भी बहुत अन्तर है। इसलिए दग्धबीजभाव वाले क्लेशों की सर्वोत्तमता तनु वाले क्लेशों की अपेक्षा सर्वाधिक है।

यहाँ पर एक बात और समझनी चाहिए कि महर्षि ने '**प्रतिपक्षभावनोपहताः**' शब्द का प्रयोग किया है। प्रतिपक्ष भावना का अभिप्राय है विरोधी भावना। किससे विरोधी भावना, क्लेशें से विरोधी भावना। क्लेशों को रोकने वाले जितने भी उपाय हैं, वे सब प्रतिपक्ष भावना वाले कहे जायेंगे। इसलिए यहाँ पर प्रतिपक्ष भावना से केवल तप, स्वाध्याय व ईश्वरप्रणिधान रूपी क्रियाओं को ही नहीं लेना चाहिए। अपितु जितने भी योग के साधन योगदर्शन में बताये गये हैं, उन सब को यहाँ पर ग्रहण करना चाहिए। हाँ, प्रसंग के अनुसार यहाँ क्रियायोग को ग्रहण किया गया है। इससे अन्य साधनों का निवारण नहीं होता है। जो क्लेश प्रसुप्त दशा में हैं, उन क्लेशों की वर्तमान काल में इतनी

thearyasamaj.org

समस्या नहीं है। जितनी समस्या उदार वाले और विच्छिन्न वाले क्लेशों की है। इसलिए वर्तमान में प्रवृत्त होने वाले क्लेशों को तनु करने की अत्यधिक आवश्यकता है। इस कारण योगाभ्यासी का विशेष कर्त्तव्य बनता है कि वह क्लेशों को अधिक से अधिक कमजोर करे। जिससे योगाभ्यासी विषय भोगों से निवृत्त होकर मन को ईश्वर में एकाग्र कर सके। उसके लिए क्रियायोग का निरन्तर अभ्यास करना होगा। बिना क्रियायोग के निरन्तर अभ्यास के क्लेश तनु नहीं हो पायेंगे।

महर्षि वेदव्यास क्लेशों की विच्छिन्न अवस्था की परिभाषा बताते हुए कहते हैं-

तथा विच्छिद्य विच्छिद्य तेन तेनऽऽत्मना पुनः पुनः समुदाचरन्तीति विच्छिन्नाः।

अर्थात् ये पाञ्चों क्लेश बीच-बीच में टूट-टूट कर भी बाद में फिर से अपने उसी-उसी रूप से फिर से प्रकट होते रहते हैं। इसका अभिप्राय यह है कि पाञ्चों क्लेश एक ही काल में व्यवहार में नहीं आ सकते हैं। इसलिए ये क्लेश बदल-बदल कर प्रकट होते रहते हैं। उदाहरण के लिए किसी वस्तु में राग उत्पन्न हो गया तो वह राग सदा के लिए वर्तमान में नहीं रहता है। कोई ऐसा प्रसंग आ जाता है कि व्यक्ति को क्रोध आ जाता है, उस स्थिति में राग दब जाता है। जब कभी दुबारा उसी वस्तु में (जिसमें पहले राग हुआ था) राग होता है, तो उसी स्तर का राग पुनः होता है। इस प्रकार पाञ्चों क्लेशों के विषय में समझना चाहिए। इसी बात को स्पष्ट करते हुए ऋषि लिखते हैं **'कथम्'**= कैसे ये क्लेश बदल-बदल कर दुबारा प्रकट होते हैं? समाधान के रूप में ऋषि कहते हैं- **'रागकाले क्रोधस्यादर्शनात्।'** अर्थात् जब कभी मनुष्य किसी वस्तु या व्यक्ति में राग उत्पन्न करता है उसी काल में क्रोध के न देखा जाने से पता लगता है कि सभी क्लेश एक काल में प्रवृत्त नहीं होते हैं। इसलिए ऋषि कहते हैं कि-

न हि रागकाले क्रोधः समुदाचरति।

अर्थात् जिस समय राग का व्यवहार चल रहा हो उसी काल में क्रोध का व्यवहार नहीं चल सकता।

यहाँ पर महर्षि वेदव्यास एक विशेष बात करते हुए कहते हैं कि-

रागश्च क्वचिद् दृश्यमानो न विषयान्तरे नास्ति।

अर्थात् कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति में राग कर रहा है, तो इससे ऐसा नहीं समझना चाहिए कि उससे अन्य व्यक्तियों व वस्तुओं में उसका राग नहीं है। इससे यह पता लगता है कि संसार में कोई ऐसी वस्तु या कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है। जिसमें मनुष्य को राग उत्पन्न नहीं हो सकता हो अर्थात् सभी वस्तुओं या व्यक्तियों में राग अवश्य हो सकता है। क्योंकि वर्तमान में जिसमें राग है वह राग बता रहा है कि अन्यों में भी राग हो सकता है। यदि अन्यों में राग नहीं हो सकता, ऐसा कोई कहे, तो यह असम्भव है क्योंकि जिस अविद्या रूपी बीज के कारण वर्तमान में जिससे राग हो रहा है। वह अविद्या रूपी बीज जबतक रहेगा तबतक अन्यों में भी राग अवश्य उत्पन्न होगा। इसलिए महर्षि कहते हैं कि आज अमुक वस्तु में राग है, तो भविष्य में अन्यों में भी राग अवश्य उत्पन्न होगा। यह सिद्धान्त नहीं बदल सकता। इसलिए महर्षि ने एक ऐसा उदाहरण प्रस्तुत किया है जिससे उपरोक्त बातों की पुष्टि हो जाती है। उदाहरण देते हुए ऋषि कहते हैं कि-

नैकस्यां स्त्रियां चैत्रो रक्त इत्यन्यासु स्त्रीषु विरक्त इति।

अर्थात् मान लीजिये कि एक चैत्र नाम वाला व्यक्ति किसी एक स्त्री में आसक्त है। इससे यह नहीं कह सकते कि उस स्त्री से भिन्न और जो स्त्रियाँ हैं उनमें उस व्यक्ति की आसक्ति नहीं होती है। ऐसा कभी भी सम्भव नहीं हो सकता।

इस सम्बन्ध में ऋषि कहते हैं कि ऐसा सम्भव इसलिए नहीं हो सकता क्योंकि-

किन्तु तत्र रागो लब्धवृत्तिरन्यत्र तु भविष्यद् वृत्तिरिति।

अर्थात् जिस समय जिस स्त्री में वह आसक्त है, वह राग वर्तमान काल में है। उसी काल में अन्य स्त्रियों के प्रति आसक्त कैसे हो सकता है क्योंकि एक समय एक व्यक्ति में ही असक्त हो सकता है। हाँ, अन्य स्त्रियों में वह भविष्य में कभी भी आसक्त हो सकता है। भविष्य में कब होगा यह कहना कठिन होगा परन्तु यह निश्चित है कि कभी न कभी अवश्य आसक्त होगा, ऐसा समझना चाहिए। भविष्य में आसक्त होने वाला राग किस रूप में रहेगा। इस बात को स्पष्ट करते हुए महर्षि कहते हैं-

स हि तदा प्रसुप्ततनुविच्छिन्नो भवति।

अर्थात् भविष्य में होने वाला वह राग या तो सोया (प्रसुप्त) हुआ है या कमजोर (तनु) है अथवा दबा (विच्छिन्न) हुआ है। वर्तमान में जो राग जिस स्त्री में उदार (वर्तमान काल में) अवस्था में है। उस स्त्रीत्व वाला राग

thearyasamaj.org

किसी भी स्त्री के प्रति भविष्य में उभर सकता है। किसी स्त्री के विषय में वह राग प्रसुप्त है जो इस वर्तमान जन्म में भी कभी उभर न सके, तो किसी न किसी जन्म में उभरेगा। चाहे एक जन्म में या अनेक जन्मों के पश्चात् अथवा यदि कोई मोक्ष में नहीं गया हो, तो चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष के बाद या दो-तीन सृष्टियों के पश्चात् या अनेक सृष्टियों के पश्चात्। कहने का अभिप्राय है कि किसी न किसी काल में वह राग उभर सकता है। यहाँ पर महर्षि ने केवल राग को लेकर उदाहरण दिया है। इसी प्रकार द्वेष आदि अन्य क्लेशों के विषय में भी समझना चाहिए। महर्षि ने '**अन्यत्र तु भविष्यद् वृत्तिरिति**' ऐसा कह कर स्पष्ट किया है कि जो एक क्लेश जिस किसी वस्तु या व्यक्ति में प्रवृत्त हो रहा हो वह क्लेश उस वस्तु या व्यक्ति से भिन्न जिस किसी में भी प्रवृत्त हो सकता है, इसको झुठलाया नहीं जा सकता। इसलिए कोई ऐसा नहीं समझे कि मेरा राग या द्वेष आदि केवल अमुक-अमुक में ही है और अन्यों में नहीं है या भविष्य में भी नहीं होगा, ऐसा कहना अनुचित होगा। इससे यह स्पष्ट होता है कि प्रत्येक क्लेश की कितनी व्यापकता है।

प्रसुप्त, तनु व विच्छिन्न अवस्थाओं की परिभाषाएँ बताकर क्रम प्राप्त उदार अवस्था की परिभाषा करते हुए महर्षि वेदव्यास कहते हैं-

विषये यो लब्धवृत्तिः स उदारः।

अर्थात् जो क्लेश किसी भी विषय के प्रति व्यवहार (वर्तमान) में प्रवृत्त होता है, तो उसे उदार नाम से कहते हैं। देश, काल, परिस्थिति के अनुसार कब कौनसा क्लेश व्यवहार में आता है, यह उस व्यक्ति विशेष पर आधारित है और जिस वस्तु या व्यक्ति के प्रति जो क्लेश प्रवृत्त होता है, उसके ऊपर निर्भर करता है। पाञ्चों क्लेशों में कभी अविद्या व्यवहार में आती है, तो कभी अस्मिता व्यवहार में आती है। कभी राग, कभी द्वेष और कभी अभिनिवेश व्यवहार में आता है। ऐसा कोई नियम नहीं है कि पहले अविद्या व्यवहार में आती है, उसके बाद अस्मिता, उसके बाद राग, उसके बाद द्वेष व अभिनिवेश। बिना क्रम के कोई भी क्लेश कभी किसी को भी ध्यान में रख कर उत्पन्न हो सकता है। यह नियम भी नहीं है कि एक क्लेश अब वर्तमान अवस्था में है, तो दुबारा वहीं क्लेश वर्तमान न हो कर अन्य क्लेश वर्तमान में होगा। फिर कैसे? एक ही क्लेश बार-बार वर्तमान हो सकता है अर्थात् एक ही क्लेश लम्बे काल तक बार-बार वर्तमान में आता रहता है। कोई-कोई क्लेश जैसे अभिनिवेश क्लेश किसी-किसी को कम मात्रा में उभरता है। किसी को द्वेष कम मात्रा में उभरता है। अलग-अलग स्तर वाले व्यक्तियों के अनुसार अलग-अलग प्रकार के क्लेश व्यवहार में कम या अधिक मात्रा में उभरते रहते हैं। पाञ्चों क्लेशों में जो क्लेश उभर कर वर्तमान काल में प्रवृत्त होता है। उस वर्तमान काल में रहने वाली क्लेश की अवस्था को 'उदार' शब्द से परिभाषित किया है।

महर्षि वेदव्यास कहते हैं कि-

सर्व एवैते क्लेशविषयत्वं नातिक्रामन्ति।

अर्थात् ये जो पाञ्चों विभाग (अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष व अभिनिवेश) हैं ये सब क्लेशपन को त्याग नहीं कर सकते अर्थात् इन सब विभागों में क्लेशत्व की ही विद्यमानता है। क्लेशत्व से रहित कोई विभाग नहीं है। यदि सभी विभागों में क्लेशत्व की विद्यमानता है, तो फिर-

कस्तर्हि विच्छिन्नः प्रसुप्ततनुरुदारो वा क्लेश इति।

अर्थात् ये सभी क्लेशपन को नहीं छोड़ते हैं, तो यह क्लेश प्रसुप्त है, तनु है, विच्छिन्न है, उदार है। इस प्रकार के भेद करने का क्या प्रयोजन है? फिर तो एक ही अवस्था रखो- एक ही क्लेश कहो अलग-अलग क्लेश क्यों कहते हो? एक ही क्लेश कहना चाहिए। चाहे उसका नाम कोई भी रखो परन्तु क्लेश अलग-अलग नहीं होने चाहिए। इस अभिप्राय को लेकर ही प्रश्न किया जा रहा है कि आप अलग-अलग क्लेश न कहकर एक क्लेश कहे। इसका समाधान करते हुए महर्षि कहते हैं कि-

उच्यते सत्यमेवैतत् किन्तु विशिष्टानामेवैतेषां विच्छिन्नादित्वम्।

अर्थात् आपका प्रश्न उचित-यथार्थ-सत्य है क्योंकि पाञ्चों विभागों में क्लेशत्व समान रूप से विद्यमान होने से जाति के रूप में एक ही क्लेश कहा जा सकता है। परन्तु क्लेशत्व की समानता होते हुए भी अस्मिता, राग, द्वेष व अभिनिवेश एक दूसरे से पृथक् करते हैं। जो अस्मिता की स्थिति है वह राग की नहीं है और जो राग की है वह द्वेष की नहीं है। ऐसा ही परस्पर पाञ्चों एक दूसरे से पृथक् हैं। सब के अलग-अलग भाव होते हुए भी सभी क्लेशपन को नहीं छोड़ते हैं। क्लेशपन के कारण जाति के रूप में एक है परन्तु अलग-अलग भावों के कारण (ईकाई) के रूप में एक न होकर अलग-अलग हैं, ऐसा समझना चाहिए। यदि ऐसा नहीं समझते हैं, तो राग को द्वेष मानना होगा और द्वेष

thearyasamaj.org

को राग समझना होगा। ऐसा ही राग को अविद्या अस्मिता और अभिनिवेश मानना होगा। ऐसा मानने पर व्यवहार नहीं हो सकता। इसलिए जाति के रूप में एक माना जाये और ईकाई के रूप में अलग-अलग मानना चाहिए।

क्लेशों के न रहने का कारण और क्लेशों के बने रहने का कारण बताते हुए महर्षि वेदव्यास कहते हैं-

यथैव प्रतिपक्षभावातो निवृत्तस्तथैव
स्वव्यञ्जकाञ्जनेनाभिव्यक्त इति।

अर्थात् जिसप्रकार से प्रतिपक्ष भावना से क्लेश समाप्त होते हैं उसीप्रकार क्लेश अपने उद्‌बोधक कारण के उपस्थित होने पर कार्यरत होते हैं। यहाँ पर महर्षि ने प्रतिपक्ष भावना को क्लेशों के समाप्ति का कारण बताया है। प्रतिपक्ष भावना का अभिप्राय है विरोधी भावना। क्लेशों को रोकने वाले जितने भी उपाय- यम, नियम आदि योग के अंग हैं, वे सब यहाँ पर ग्रहण होते हैं। विशेष रूप से प्रारम्भिक योगाभ्यासी के लिए क्रियायोग महत्त्वपूर्ण साधन हैं। जिससे साधक क्लेशों को कमजोर (तनु) कर-करके नष्ट कर सकता है। योगाभ्यासी का जैसा-जैसा स्तर बनता जाता है वैसे-वैसे उपाय को अपनाता हुआ क्लेशों को कमजोर करता जाता है। क्रियायोग की उत्कृष्ट अवस्था बन जाने पर विवेक वैराग्य की ओर बढ़कर क्लेशों को इतना कमजोर बना देता है कि वे क्लेश कार्य करने में असमर्थ हो जाते हैं। ऐसी परिस्थिति में प्रसंख्यान रूपी तत्त्वज्ञान से क्लेशों को नष्ट कर देता है। प्रतिपक्ष भावना कारण है और उससे उत्पन्न विवेक-वैराग्य कार्य हैं परन्तु कार्य कारण को एक बना कर यहाँ पर क्लेशों की निवृत्ति बताई गई है।

यदि साधक प्रतिपक्ष भावना को नहीं अपनाता है, तो क्लेश अपने उद्‌बोधक कारण- रूप, रस, गन्ध आदि विषय और देश, काल, परिस्थिति, अलग-अलग योनियाँ और विशेष रूप से मनुष्य की अलग-अलग अवस्थाएँ (बाल्य, किशोर, युवा, प्रौढ़, वृद्ध) आलम्बन के रूप में उपस्थित हो जाते हैं तब क्लेश प्रकट होने लगते हैं। यदि साधक क्लेशों को प्रकट होने नहीं देना चाहता है, तो प्रतिपक्ष भावना को अपनाना चाहिए। बिना प्रतिपक्ष भावना के क्लेश नष्ट नहीं हो सकते। इसलिए क्लेशों को नष्ट करने का एक महत्त्वपूर्ण कारण क्रियायोग है। इस क्रियायोग को जीवन के साथ जोड़कर चलना प्रत्येक मनुष्य के लिए अनिवार्य है। चाहे लौकिक क्षेत्र में हो या आध्यात्मिक क्षेत्र में हो। दोनों के लिए क्रियायोग अमोघ शस्त्र है।

महर्षि वेदव्यास आगे लिखते हैं कि-

सर्व एवामी क्लेशा अविद्याभेदाः।
कस्मात्? सर्वेष्वविद्यैवाभिप्लवते।

अर्थात् ये सारे क्लेश अविद्या के ही भेद हैं। कैसे? क्योंकि सभी क्लेशों में अविद्या ही व्याप्त हो कर रहती है। अभिप्राय यह है कि चाहे अस्मिता क्लेश हो, चाहे राग क्लेश हो, चाहे द्वेष क्लेश हो, चाहे अभिनिवेश क्लेश हो इन सब के मूल में मिथ्याज्ञान ही कार्य करता है। मिथ्याज्ञान को ही अविद्या कहते हैं। इसलिए सभी क्लेशों में अविद्या व्याप्त होकर रहती है, ऐसा कहा गया है। इस बात को स्पष्ट करते हुए महर्षि वेदव्यास कहते हैं-

यदविद्यया वस्त्वाकार्यते तदेवानुशेरते क्लेशा विपर्यास प्रत्यकाले उपलभ्यन्ते क्षीयमाणां चाविद्यामनु क्षीयन्त इति।

अर्थात् जो भी वस्तु या व्यक्ति अविद्या से युक्त होते हैं उनके पीछे-पीछे बाकि क्लेश भी अनुसरण करते हुए उनसे जुड़ जाते हैं। क्योंकि जब अविद्या रूपी मिथ्याज्ञान जुड़ा रहता है तब मनुष्य को अस्मिता होती है, राग उत्पन्न होता है, द्वेष होने लगता है, अभिनिवेश से युक्त होने लगता है। मिथ्याज्ञान की उपस्थिति में ही बाकि सब क्लेश होने लगते हैं। यदि अविद्या रूपी मिथ्याज्ञान नष्ट हो जाता है, तो बाकि क्लेश भी उस अविद्या के पीछे-पीछे नष्ट हो जाते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि पाञ्चों क्लेशों में अविद्या की मुख्यता है। इसीलिए अविद्या को उत्पत्ति (प्रसवभूमि) स्थान कहा जाता है।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

विद्वानों को अपनी शिक्षा से कुमार ब्रह्मचारी और कुमारी ब्रह्मचारिणियों को परमेश्वर से लेके पृथिवी पर्य्यन्त पदार्थों का बोध कराना चाहिये कि जिससे वे मूर्खपनरूपी बन्धन को छोड़ के सदा सुखी हों।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ६.८

इस संसार में माता-पिता, बन्धुवर्ग और मित्रवर्गों को चाहिये कि अपने सन्तान आदि को अच्छी शिक्षा देकर ब्रह्मचर्य करावें जिससे वे गुणवान् हों।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ६.९

thearyasamaj.org

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर (प्राथमिक व द्वितीय स्तर)

दिनांक : १४ से २१ जून, २०१५

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान-विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग-साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक-दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।
३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य-सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि-उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
६. बाह्य-वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार-पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।
८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय-कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।
१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन-सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ-मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्-पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि की साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ

thearyasamaj.org

में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४
email:psabhaa@gmail.com

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

-संयोजक

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उस पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले २५ रु. **बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

मनुष्यों को उचित है कि परमेश्वर में ही मन बुद्धि को युक्त कर विद्वानों के सङ्ग से विद्या को पा सुखी हो अन्य मनुष्यों को भी इसी प्रकार आनन्दित करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.१४

जैसे विद्वान् लोग ईश्वर की सृष्टि में विद्या से पदार्थों की परीक्षा करके कार्य्यों में उपयोग कर सुखों को प्राप्त करते हैं वैसे ही सब मनुष्यों को इस यज्ञ का अनुष्ठान कर सब सुखों को पहुँचाना चाहिये।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.२२

thearyasamaj.org

ध्यान प्रशिक्षण योजना

ध्यान का महत्त्व सदा से रहा है। आज के तनाव व प्रतिस्पर्धा के वातावरण में यह अधिक आवश्यक हो गया है। नई पीढ़ी यज्ञादि कर्मकाण्ड की अपेक्षा-ध्यान में अधिक रुचि व आकर्षण रखने लगी है। प्रौढ़ों व वृद्धों की आध्यात्मिक उन्नति की चाह ध्यान के माध्यम से पूरी हो सकती है। समाज सुधार व उन्नति के इच्छुक व इसमें प्रयत्नशील आर्यों को ध्यान प्रशिक्षण का उपाय सार्थक लगेगा। ऐसी इच्छा वाले सज्जन अपने यहाँ किसी भी आर्यसमाज, आर्य संस्था, विद्यालय, महाविद्यालय, गुरुकुल, सार्वजनिक स्थान आदि में 'ध्यान-प्रशिक्षण' करवाना चाहते हों, तो कृपया अपने व कार्यक्रम-स्थान, समय आदि की पूरी सूचना के साथ सम्पर्क करें।

परोपकारिणी सभा द्वारा प्रशिक्षित अनेक ध्यान-प्रशिक्षक इस कार्य में सेवा के लिए तैयार हैं। ये ध्यान-प्रशिक्षक आपके जनपद के निकट भी उपलब्ध हो सकते हैं। आयोजकों को कार्यक्रम हेतु स्थान, बैठक-व्यवस्था, आवश्यक हो तो माईक आदि की व्यवस्था, प्रशिक्षक के निवास, भोजन, आवागमन यात्रा आदि की व्यवस्था करनी होगी।

सम्पर्क-संयोजक, ध्यान प्रशिक्षण योजना, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर, ३०५००१, दूरभाष-०१४५-२४६०१६४, ईमेल-psabhaa@gmail.com

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़ कर ये प्रवचन निःशुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़ कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिख कर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

thearyasamaj.org

।।ओ३म्।।

अलग-अलग स्तरों में योग-साधना शिविर

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि-उद्यान, अजमेर में वर्षों से अब तक योग्य आचार्यों द्वारा योग-साधकों का निर्माण करने के लिए वर्ष में दो बार योग से सम्बन्धित व ध्यान से सम्बन्धित शिविरों का आयोजन किया जाता रहा है और साधकों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रयास किया जाता रहा है। समाज में और अधिक योग्य व आदर्श साधकों की आवश्यकता अनुभव करते हुए इस वर्ष जून मास के शिविर में नवीन पाठ्यक्रम की विधि अपनाकर इस दिशा में एक नया मोड़ दिया गया है।

परोपकारिणी सभा द्वारा ऋषि उद्यान में योग-साधना शिविर (प्राथमिक स्तर) के दो शिविर लगाये जा चुके हैं। यह शिविर ध्यान से सम्बन्धित, ईश्वर-जीव-प्रकृति के वास्तविक स्वरूप को जानने से सम्बन्धित, योगदर्शन व सांख्यदर्शन के कुछ प्रमुख विषयों के सूत्रों के माध्यम से प्राथमिक स्तर पर योगदर्शन व सांख्यदर्शन को जानने-समझने से सम्बन्धित, आत्मनिरीक्षण में कुछ नये विषयों को सूक्ष्मता से समझने से सम्बन्धित, दिनचर्या को अनुशासित व सात्त्विक बनाने से सम्बन्धित तथा विभिन्न सैद्धान्तिक व व्यावहारिक विषयों के ज्ञान से सम्बन्धित प्रारम्भिक स्तर के योग के इच्छुक साधकों के लिए लगाया गया। इस योग-साधना शिविर को आगामी वर्षों में चतुर्थ स्तर तक लगाने की योजना बनाई गई है। प्रारम्भिक स्तर से लेकर द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ स्तर तक के शिविरों में पूर्व सूचित पाठ्यक्रमित विषयों में अधिक से अधिक सूक्ष्मता, दिनचर्या में और अधिक अनुशासन व सात्त्विकता, आहार-शुद्धि से लेकर मन, आत्मा की शुद्धि पर्यन्त अनुभवात्मक स्तर पर योग-साधकों को ज्ञान करवाया जाएगा। प्रत्येक स्तर के साधकों को उनके सैद्धान्तिक व व्यावहारिक ज्ञान से सम्बन्धित तथा उनके व्यक्तिगत आचरण व अनुशासन को दृष्टि में रखते हुए परीक्षा-पद्धति के माध्यम से प्रथम-श्रेणी व उच्च प्रथम-श्रेणी के प्रमाण-पत्र दिए जायेंगे। इस प्रकार की विधि से योग्य साधकों को समाज में सम्मान मिलेगा तथा वे और अधिक उत्साह से समाज व देश के कल्याण के लिए कार्यरत होंगे, उन्हें देखकर अन्य साधक भी प्रेरित होंगे।

परोपकारिणी सभा व गुरुकुल ऋषि उद्यान के योग्य आचार्यों व संयोजकों द्वारा नवनिर्मित इस योजना के प्राथमिक स्तर में पर्याप्त उपलब्धि हुई है। भविष्य में इस योजना में आप सब के सहयोग की आवश्यकता है।

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें।

-संपादक

thearyasamaj.org

कुछ तड़प–कुछ झड़प

– राजेन्द्र जिज्ञासु

महर्षि दयानन्द दर्शन का विश्वव्यापी प्रभावः- सस्ता साहित्य मण्डल ने 'हमारी परम्परा' नाम से एक ग्रन्थ का प्रकाशन किया है। इसके संकलनकर्ता अथवा सम्पादक प्रसिद्ध गाँधीवादी श्री वियोगीहरि जी ने आर्यसमाज विषय पर भी एक उत्तम लेख देने की उदारता दिखाई है। उनसे ऐसी ही आशा थी। वे आर्यसमाज द्वेषी नहीं थे। इन पंक्तियों के लेखक से भी उनका बड़ा स्नेह था। प्रसंगवश यहाँ बता दें कि आप स्वामी सत्यप्रकाश जी का बहुत सम्मान करते थे।

इस ग्रन्थ में छपे आर्यसमाज विषयक लेख के लेखक आर्य पुरुष यशस्वी हिन्दी साहित्यकार स्वर्गीय श्री विष्णु प्रभाकर जी हैं। आपने इसमें एक भ्रमोत्पादक बात लिखी है जिसका निराकरण करना हम अपना पुनीत व आवश्यक कर्त्तव्य मानते हैं। आपने लिखा है कि आर्यसमाज के समाज सुधार सम्बन्धी कार्यों का जितना प्रभाव पड़ा है वैसा प्रभाव आर्यसमाज़ के दर्शन का नहीं पड़ा। हम इस भ्रमोत्पादक कथन के लिए मान्य विष्णु प्रभाकर जी को कतई दोष नहीं देते। उनका कथन इस दृष्टि से यथार्थ है कि ऋषि-दर्शन का जितना प्रचार होना चाहिए था उतना प्रचार इस समय नहीं हो रहा है। एक भावनाशील आर्य होने के नाते आपने जो अनुभव किया सो ठीक है। तथ्य यही है कि आर्यसमाज के नेताओं की तीन पीढ़ियों ने असह्य दुःख कष्ट झेलकर, जानें वारकर, रक्तरंजित इतिहास रचकर ऋषि दर्शन की संसार पर अमिट व गहरी छाप लगाई। चौथी पीढ़ी आन्तरिक शत्रु की घेराबन्दी में फंसकर हतोत्साहित ही नहीं हुई पूर्णतया पराजित व असहाय हो गई।

पराभव कैसे हुआ?:- यह घेराबन्दी संस्थावादियों या स्कूल पन्थियों ने की। आर्यसमाज संस्थावाद के कीच-बीच फंसकर शिक्षा व्यापार मण्डल का रूप धारण कर गया। वैदिक दर्शन का प्रचार तो कुछ व्यक्ति तथा कुछ ही संस्थायें कर रही हैं। यहाँ पहली तीन पीढ़ी के महापुरुषों के कुछ नाम देकर उनके प्रति कृतज्ञता का प्रकाश करना हमारा कर्त्तव्य बनता है।

तीन पीढ़ियों के आग्नेय नेताः- पं. गुरुदत्त विद्यार्थी और वीर शिरोमणि पं. लेखराम प्रथम पीढ़ी की दो विभूतियाँ थीं।

श्री स्वामी नित्यानन्द महाराज, स्वामी श्रद्धानन्द महाराज, स्वामी दर्शनानन्द महाराज, स्वामी योगेन्द्रपाल, पं. गणपति शर्मा, आचार्य रामदेव दूसरी पीढ़ी के तपस्वी सर्वस्व त्यागी मिशनरी नेता थे।

महात्मा नारायण स्वामी, स्वामी स्वतन्त्रानन्द, पं. धर्मभिक्षु, पं. रामचन्द्र देहलवी, भूमण्डल प्रचारक मेहता जैमिनि, पं. गंगाप्रसाद द्वय, आचार्य चमूपति, वीर शिरोमणि श्याम भाई, क्रान्तिवीर नरेन्द्र, कर्मवीर लक्ष्मण आर्योपदेशक, कुँवर सुखलाल, स्वामी अभेदानन्द, पं. अयोध्याप्रसाद तीसरी पीढ़ी के समर्पित नेता थे।

चौथी पीढ़ी के नेता जोड़-तोड़ वादी कुर्सी भक्त, चुनाव तनाव के चक्करों में उलझकर मिशन को गौण बनाने का कलङ्क लेकर संसार से गये। ये लोग शिक्षा व्यापार मण्डल के सुनियोजित संगठन का सामना न कर पाये। गुरुकुल भी निष्प्राण हो गये। बड़ों से सम्पदा तो अपार मिल गई परन्तु न तो श्रीमद्दयानन्द उपदेशक विद्यालय लाहौर का स्थान कोई संस्था ले पाई और न स्वामी स्वतन्त्रानन्द के रिक्त स्थान की पूर्ति ही समाज कर पाया।

भूमि के गुरुत्व आकर्षण का नियमः- तथापि यह मानना पड़ेगा कि पहली तीन पीढ़ियों ने इतना ठोस और व्यापक प्रचार किया कि **सकल विश्व के वैचारिक चिन्तन तथा व्यवहार में भूमि के गुरुत्व आकर्षण के नियम के सदृश महर्षि दयानन्द के गुरुत्व आकर्षण का नियत ओतप्रोत है।** जैसे यह नियम सब मानवीय गतिविधियों में ओतप्रोत है परन्तु दिखाई नहीं देता ठीक इसी प्रकार सब मत पन्थों के मानने वालों की सोच और व्यवहार में महर्षि दयानन्द का दर्शन ओतप्रोत है। यह छाप और प्रभाव भले ही देखने वालों को दिखाई न दे परन्तु इतिहास इसकी साक्षी दे रहा है। यह सब कुछ आपके सामने है। हाँ! हमें यह तो मान्य है कि अन्धविश्वासों की अन्धी आँधी सब मत पन्थों को उड़ाकर ले जाती दीख रही है। लीजिये महर्षि दयानन्द जी महाराज के वैदिक दर्शन को दिग्विजय के कुछ तथ्य कुछ बिन्दु इस लेखमाला में देते हैं:-

शैतान कहाँ है?:- ईसाई तथा इस्लामी दर्शन का आधार शैतान के अस्तित्व पर है। शैतान सृष्टि की उत्पत्ति के समय से शैतानी करता व शैतानी सिखलाता चला आ

thearyasamaj.org

रहा है। उसी का सामना करने व सन्मार्ग दर्शन के लिए अल्लाह नबी भेजता चला आ रहा है। मनुष्यों से पाप शैतान करवाता है। मनुष्य स्वयं ऐसा नहीं सोचता। पूरे विश्व में आज पर्यन्त किसी भी कोर्ट में किसी ईसाई मुसलमान जज के सामने किसी भी अभियुक्त ईसाई व मुसलमान बन्धु ने यह गुहार नहीं लगाई कि मैंने पाप नहीं किया। मुझ से अपराध करवाया गया है। पाप के लिए उकसाने वाला तो शैतान है।

किसी न्यायाधीश ने भी कहीं यह टिप्पणी नहीं की कि तुम शैतान के बहकावे में क्यों आये? दण्ड कर्ता को ही मिलता है। कर्ता की पूरे विश्व के कानूनविद् यही परिभाषा करते हैं जो सत्यार्थप्रकाश में लिखी है अर्थात् '**स्वतन्त्रकर्ता**' कहिये शैतान कहाँ खो गया? फांसी पर तो इल्मुद्दीन तथा अब्दुल रशीद चढ़ाये गये। क्या यह महर्षि दयानन्द दर्शन की विजय नहीं है? अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी, इरान, पाकिस्तान व मिश्र में इसी नियम के अनुसार अपराधी फांसी पर लटकाये जाते हैं और कारागार में पहुँचाये जाते हैं।

सर सैयद अहमद का लेख याद कीजिये:- मुसलमानों के सर्वमान्य नेता तथा कुरान के भाष्यकार सर सैयद अहमद खाँ ने अपने ग्रन्थ में एक कहानी दी है। एक मौलाना को सपने में शैतान दीख गया। मौलाना ने झट से उसकी दाढ़ी को कसकर पकड़ लिया। एक हाथ से उसकी दाढ़ी को खींचा और दूसरे हाथ से शैतान की गाल पर कस कर थप्पड़ मार दिया। शैतान की गाल लाल-लाल हो गई। इतने में मौलाना की नींद खुल गई। देखता क्या है कि उसके हाथ में उसी की दाढ़ी थी जिसे वह खींच रहा था और थप्पड़ की मार से उसी का गाल लाल-लाल हो गया था।

इस पर सर सैयद की टिप्पणी है कि शैतान का अस्तित्व कहीं बाहर नहीं (खारिजी वजूद) है। तुम्हारे मन के पाप भाव ही तुम से पाप करवाते हैं। अब प्रबुद्ध पाठक अपने आपसे पूछें कि यह क्रान्ति किसके पुण्य प्रताप से हो पाई? यह किसका प्रभाव है? मानना पड़ेगा कि यह उसी ऋषि का जादू है जिसने सर्वप्रथम शैतान वाली फ़िलास्फ़ी की समीक्षा करके अण्डवण्ड-पाखण्ड की पोल खोली।

'जवाहिरे जावेद' के छपने पर:- देश की हत्या होने से पूर्व एक स्वाध्यायशील मुसलमान वकील आर्य सामाजिक साहित्य का बड़ा अध्ययन किया करता था। उस पर महर्षि के वैदिक सिद्धान्त का गहरा प्रभाव पड़ता गया परन्तु एक वैदिक मान्यता उसके गले के नीचे नहीं उतर रही थी। जब जीव व प्रकृति भी अनादि हैं, इन्हें परमात्मा ने उत्पन्न नहीं किया तो फिर परमात्मा इनका स्वामी कैसे हो गया? प्रभु जीव व प्रकृति से बड़ा कैसे हो गया? तीनों ही तो समान आयु के हैं। न कोई बड़ा और न ही छोटा है।

आचार्य चमूपति की मौलिक दार्शनिक कृति 'जवाहिरे जावेद' के छपते ही उसने इसे क्रय करके पढ़ा। पुस्तक पढ़कर वह स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के पास आया। महाराज के ऐसे कई मुसलमान प्रेमी भक्त थे। उसने स्वामी जी से कहा कि आर्यसमाज की सब मान्यताएँ मुझे जँचती थीं, अपील करती थीं परन्तु प्रकृति व जीव के अनादित्त्व का सिद्धान्त मैं नहीं समझ पाया था। पं. चमूपति जी की इस पुस्तक को पढ़कर मेरी सब शंकाओं का उत्तर मिल गया।

मित्रो! कहो कि यह किस की दिग्विजय है। इसी के साथ यह बता दें कि दिल्ली के चाँदनी चौक बाजार में किसी गली में एक प्रसिद्ध मुस्लिम मौलाना महबूब अली रहते थे। मूलतः आप चरखी दादरी (हरियाणा) के निवासी थे। आपने भी यह अद्‌भुत पुस्तक पढ़ी। फिर आपने एक बड़ा जोरदार लेख लिखा। श्री सत्येन्द्र सिंह जी ने हमें उस लेख का हिन्दी अनुवाद करने की प्रेरणा दी। अब समय मिलेगा तो कर देंगे। इस लेख में पण्डित जी के एतद्विषयक तर्कों को पढ़कर मौलाना ने सब मौलवियों से कहा था कि **यदि प्रकृति व जीव के अनादित्व को स्वीकार न किया जावे तो कुरान वर्णित अल्लाह के सब नाम निरर्थक सिद्ध होते हैं।** मौलाना की यह युक्ति अकाट्य है। कैसे? अल्लाह के कुरान में ९९ नाम हैं यथा न्यायकारी, पालक, मालिक, अन्नधन (रिजक) देने वाला आदि। अल्लाह के यह गुण व नाम भी तो अनादि हैं। जब जीव नहीं थे तो वह किसका पालक, मालिक था? किसे न्याय देता था? प्रकृति उत्पन्न नहीं हुई थी तो जीवों को देता क्या था? तब वह स्रष्टा (खालिक) कैसे था? किससे सृजन करता था? मौलाना की बात का प्रतिवाद कोई नहीं कर सका। अब प्रबुद्ध पाठक निर्णय करें कि यह किस की छाप है? यह वैदिक दर्शन की विजय है या नहीं?

मरयम कुमारी थी क्या?:- मुसलमान व ईसाई दोनों ही हज़रत ईसा का जन्म कुमारी मरयम से मानते आये हैं। अब विश्व प्रसिद्ध दार्शनिक बर्ट्रेण्ड रस्सल तथा सर सैयद की कोटि के विचारक ऐसा नहीं मानते। सर

thearyasamaj.org

सैयद अहमद खाँ ने तो लाहौर के एक पठित मुस्लिम युवक के प्रश्न का उत्तर देते हुए श्री ईसा के जन्म विषयक तर्क भी वही दिया जो पं. लेखराम जी ने कुल्लियात आर्य मुसाफिर में दिया है। अमेरिका से प्रकाशित एक पुस्तक में कई युवा पादरियों ने अनेक ऐसे-ऐसे वैदिक विचारों को स्वीकार किया है।

पुराण व्यासकृत नहीं:- हरिद्वार के सन् १८७९ के कुम्भ तक ऋषि विरोधियों का सबसे बड़ा सनातनी सेनापति पं. श्रद्धाराम फिलौरी था। वह ऋषि की शत्रुता में काशी वालों से भी तब तक कहीं आगे था। उसने लिखा है कि १८ पुराण व्यासकृत नहीं।[१] यह सन्देश इस युग में सर्वप्रथम ऋषि ने सुनाया। यह छाप ऋषि की वैदिक विचारधारा की नहीं तो किसकी है?

वेद संहितायें चार ही हैं:- पौराणिक तो उपनिषद् ब्राह्मण ग्रन्थ सबको वेद ही मानते थे। महर्षि का घोष था कि चार संहितायें ही ईश्वरीय वाणी हैं। त्रिवेदी और चतुर्वेदी ब्राह्मण तो पाये जाते हैं परन्तु कई विद्वानों को सात उपनिषदें कण्ठाग्र हैं फिर वे सप्तवेदी और आठ-दस उपनिषदों के विद्वान् अष्टवेदी, दशवेदी और एकदशवेदी क्यों नहीं? अमेरिका से प्रकाशित Secret Teachings of The Vedas के ईसाई लेखक ने तथा डॉ. अविनाशचन्द्र वसु सरीखे सब लेखकों ने चार संहिताओं को ही वेद माना है। यह किसके पुण्य प्रताप का फल है।

वेद के यौगिक अर्थ:- वेद भाष्यकारों को महर्षि ने आर्ष ग्रन्थों के आधार पर वेदभाष्य करने के लिये यौगिक अर्थों की कुञ्जी दी। Humans From The Rigveda पुस्तक के अमेरिकन लेखक ने भी डंके की चोट से महर्षि की वेदभाष्य की इस विधा को स्वीकार किया है। कौन है जो इस मूलभूत आर्ष मान्यता की इस दिग्विजय को महर्षि दयानन्द का विश्वव्यापी प्रभाव न मानेगा?

न्याय की रात या न्याय का दिन:- ईसाई मुसलमान सभी प्रलय की रात (या दिन) को ईश्वरीय न्याय के सिद्धान्त को मानते आये हैं। इसी को अंग्रेजी में Day of Judgement कहा जाता है। अब डॉ. गुलाम जेलानी की लोकप्रिय पुस्तकों में इस्लाम का नया दार्शनिक दृष्टिकोण सामने आया है। वह यह घोषणा कर रहे हैं कि अल्लाह ताला प्रतिपल न्याय करता है। जिसकी आँखें हैं वे देख रहे हैं कि सारे संसार पर ऋषि की दार्शनिक छाप का गहरा प्रभाव है। आर्यसमाज की वेदी से ही दार्शनिक सिद्धान्तों का प्रचार बन्द होने से स्कूल खोले, नारी उद्धार किया, स्वराज्य के मन्त्र द्रष्टा की रट लगाने वालों के दुष्प्रचार को प्रमुखता मिलने से भ्रामक विचार फैल गया कि आर्यसमाज के दार्शनिक विचारों का संसार पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा।

टिप्पणी

१. द्रष्टव्य सत्यामृतप्रवाह लेखक पं. श्रद्धाराम जी।

- वेद सदन, अबोहर, पंजाब-१५२११६

परोपकारी के सम्बन्ध में घोषणा

प्रकाशन – परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर

संपादक	–	धर्मवीर	**मुद्रक का नाम**	–	श्री मोहनलाल तँवर,
नागरिकता	–	भारतीय	**पता**	–	वैदिक यन्त्रालय,
पता	–	केसरगंज, अजमेर			केसरगंज, अजमेर
प्रकाशक	–	धर्मवीर	**प्रकाशन अवधि**	–	पाक्षिक
नागरिकता	–	भारतीय			
पता	–	कार्यकारी प्रधान, परोपकारिणी सभा, अजमेर			

मैं, धर्मवीर एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि उपरोक्त विवरण मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार सही है।

फरवरी २०१५ **प्रकाशक : धर्मवीर**

thearyasamaj.org

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग एक वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ निःशुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम- **भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या- **10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम- **आई.डी.बी.आइ**, पावर हाऊस के सामने,

जयपुर रोड़, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या- **091104000057530**

IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन-जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग-यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था-भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था-भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद-प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था-भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था-भजन' (चैनल) डिश-टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा-स्काई, वीडियोकोन, बिग-टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार-बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

thearyasamaj.org

अवतारवाद का अन्त होगा?

- रामनिवास गुणग्राहक

अवतारवाद की अनिष्टकारी कल्पना जिसने भी कभी की होगी, तब उसने सपने में भी नहीं सोचा होगा कि एक दिन कोई भी यूँ ही मुँह उठाकर स्वयं को परमात्मा का अवतार घोषित कर देगा। अवतारवाद की अवधारणा चाहे जब से चली हो, लेकिन प्रतीत होता है कि विगत ५०-६० वर्षों के कालखण्ड में इस अवतारवाद ने कुछ अधिक ही उन्नति कर ली है। एक समय था जबकि शंकराचार्य से लेकर सन्त तुलसी तक सब साधु-महात्मा भक्त बनकर ही आनन्द की अनुभूति कर लेते थे, स्वामी विवेकानन्द तक को भगवान बनने की न सूझी। आज की बात करें तो लगता है भक्त बनने में कोई अधिक सुख शेष नहीं रहा, जिसे देखो भगवान बनने में लगा हुआ है। सम्भवत: पुरानी पीढ़ी के धर्मशील लोगों को स्मरण हो कि सन् १९७० के आस-पास एक पूरा परिवार ही विभिन्न परमात्माओं का अवतार बनकर भक्त मण्डली की सर्वमनोकामनाएँ पूर्ण कर रहे थे। सन् १९५४ में एक व्यक्ति ने- 'स्वामी हंस महाराज' नाम रखकर स्वयं को श्री कृष्ण का अवतार घोषित कर दिया। इनकी पत्नी को 'जगत् जननी' की उपाधि मिल गई। इस जगत् -जननी ने चार पुत्रों को जन्म दिया और चारों ही अवतार बन गये। बड़ा पुत्र सत्यपाल- 'बाल भगवान' बनकर 'सन्तलोक के स्वामी' कहलाये। दूसरे महीपाल 'शंकर के अवतार' बनकर 'भोले भण्डारी' के नाम से प्रसिद्ध हुए। तीसरे धर्मपाल-प्रजापति ब्रह्म के अवतार बनकर भक्त मण्डली में चक्रवर्ती राजा के नाम से विख्यात हुए। सबसे छोटे प्रेमपाल ने स्वयं को 'पूर्ण परमात्मा' घोषित करके देश-विदेशों में मनमानी लीलाएँ कीं।

इनकी लीला स्थलियों में इंग्लैण्ड और अमेरिका का नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। वैसे तो ये गोरे भक्त-भक्तिनों के साथ देश-विदेश में खूब आते-जाते रहते थे, लेकिन नवम्बर १९७२ में लगभग ९०० गौरांग भक्त-भक्तिनों के साथ पालम हवाई अड्डे पर उतरे तो स्वयं तो कुछ विशेष शिष्य-शिष्याओं के साथ राल्स रॉयस कार में निकल गए। इनका निजी सचिव बिहारीसिंह कस्टम अधिकारियों से सामान लेने गया तो कस्टम वालों ने एक बक्स की चाबी माँगी। चाबी तो पूर्ण परमात्मा ले उड़े थे, जब उनसे मँगाकर बॉक्स खोला गया तो उसमें दस लाख रुपये के सोना, हीरे व डॉलर आदि निकले। परमात्मा की चोरी पकड़ी गई। इतना ही नहीं एक वर्ष पूर्व १९७१ में इनके भक्तों ने भगवान की एक पत्रकार वार्ता रखी जिसमें आपने स्वयं को 'पूर्ण परमात्मा' कहते हुए यह भी घोषणा की कि 'मैं हिन्दू नहीं हूँ।' अगले दिन समाचार पत्रों में इस वार्ता का विवरण छापा तो नवभारत टाइम्स में छपे कुछ शब्दों को लेकर इनके भक्त कुपित हो गये और नवभारत टाइम्स के कार्यालय पर पथराव किया जिसमें कई घायल हुए और एक सिपाही का प्राणान्त हो गया।

हमारे अवतारवादी बन्धु तो धन्य हो गये होंगे, इतने भगवानों को एक ही समय व एक ही परिवार में पाकर। पता नहीं क्यों सनातन धर्म वालों को यह सब अच्छा नहीं लगा। मेरठ के कट्टर सनातनधर्मी भक्त श्री रामशरण दास जी लिखते हैं- 'भारत में लगभग ढ़ाई सौ से ऊपर अवतार हैं और मैं सैकड़ों से भेंट कर चुका हूँ..... जो अपने को भगवान श्री राम का अवतार तो कोई अपने को भगवान श्री कृष्ण का, कोई अपने को भगवान श्री शंकर का, तो कोई स्वयं को भगवती श्री दुर्गा का अवतार बता-बताकर डोल रहे हैं और लूट रहे हैं स्वयं पर ब्रह्म परमात्मा बनकर।..... हाय-हाय कैसे रक्षा होगी मेरे इस देश की? इस महान् परम पवित्र हिन्दू जाति की इन महान् कालनेमि पाखण्डी नकली अवतारों से?' सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री और केन्द्रीय सनातन धर्म सभा के मन्त्री स्वामी चरणदास जी महामण्डलेश्वर ने गाँधी मैदान में एक सार्वजनिक सभा के अध्यक्षीय भाषण में अपनी व्यथा प्रकट करते हुए कहा था- केवल दिल्ली में पिछले ८-१० वर्षों से १४ ढ़ोंगी व्यक्ति हिन्दुओं में बड़े हो गये हैं जो अपने को अवतार कहते हैं और हिन्दू धर्म पर कुठाराघात कर रहे हैं।

भक्त रामशरण दास जी- 'धर्म कालनेमि पाखण्डी नकली अवतारों की चर्चा करते हैं। प्रश्न होता है कि क्या कोई असली अवतार भी होता है? क्या कोई भी सनातनधर्मी विद्वान्, साधु-संन्यासी या धर्माचार्य सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान् आदि गुणों से युक्त परमात्मा का असली अवतार प्रमाणित कर सकता है? जब से हमारे कथित सनातनधर्मी सच में पुराणपन्थी धर्म गुरुओं ने पूर्ण परमात्मा को भौतिक शरीरधारी बना दिया, तब से इस

thearyasamaj.org

अवतारवाद के पाखण्ड ने संसार के विभिन्न क्षेत्रों में ईश्वर पुत्रों, पीर-पैगम्बरों की एक नई शृंखला का बीजारोपण कर दिया यही बीजारोपण आज विकृति की सीमा पार करता हुआ कथित सन्त रामपालदास पर आकर पहुँच गया। अगर अब भी हमारे सनातनधर्मी इस पाखण्ड के विरुद्ध खड़े न हुए तो आगे चलकर इसका और भी कुत्सित चेहरा हमारे सामने आकर रहेगा। भर्तृहरि ने सच कहा है-

विवेकभ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः।

अर्थात् विवेक भ्रष्ट व्यक्ति व समाज का हर दिशा व हर दृष्टि से पतन ही होता है। इस संसार का एक अनुभव सिद्ध सिद्धान्त है कि कोई वस्तु हमारे लिए जितनी उपयोगी, लाभदायक व कल्याणकारी होती है, उसका दुरुपयोग उतना ही घातक व अकल्याणकारी होता है। आयुर्वेद के ऋषि लिखते हैं-

प्राणाः प्राणभृतां अन्नं तद् अयुक्त्या निहन्ति असून्।
विषं प्राणहरं तत् च, युक्तियुक्तं रसायनम्।।

अर्थात् अन्न प्राण का भरण-पोषण करने वाला है। अन्न गलत ढंग से खाया जाये तो विष बनकर प्राणघातक बन जाता है और युक्तियुक्त ढंग से खाया जाये तो रसायन का काम करता है।

अन्न हमारे जीवन का आधार है- **'अन्नं वै प्राणिनां प्राणः', 'अन्नं वै ब्रह्म तद् उपासीत्'** जैसे ऋषि वचन इसकी पुष्टि करते हैं। सोचने की बात है कि ऋषियों की दृष्टि में अन्न का दुरुपयोग प्राण-पोषण के स्थान पर प्राण-घातक परिणाम देता है। हम जाने-अनजाने में अन्न का दुरुपयोग करके अनेक प्रकार की भयंकर बीमारियों का शिकार होते रहते हैं। यही स्थिति धर्म और ईश्वर के सम्बन्ध में है। सर्वव्यापक, सर्वज्ञ व सर्वशक्तिमान् परमात्मा को देह के बन्धन में डालकर, एक देशी बनाकर पिछले तीन-चार हजार वर्षों से हमारे धर्मगुरु, धर्माचार्य ईश्वर और धर्म का जो निजी स्वार्थों के लिए जो भयंकर दुरुपयोग कर रहे थे, उसका परिणाम तो आसाराम और रामपाल के रूप में आना ही था। सारे सनातनधर्मी कहलाने वाले हिन्दू पौराणिक यह बता दें कि श्रीराम और श्रीकृष्ण परमात्मा का अवतार हो सकते हैं तो आसाराम और रामपाल क्यों नहीं हो सकते? जब पुराणपन्थी बिना सिद्धान्त, बिना तर्क और बिना वेद शास्त्रों के प्रमाण दिये, श्री राम-श्री कृष्ण को परमात्मा का अवतार मानकर पूजा कर-करा सकते हैं तो कबीरपन्थी रामपाल को परमात्मा का अवतार मानकर क्यों नहीं पूज सकते?

हम यहाँ रामपाल और आसाराम की श्रीराम और श्री कृष्ण से तुलना नहीं कर रहे। निःसन्देह मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम और योगेश्वर श्री कृष्ण का जीवन पूर्णतः पवित्र था, वे हर दृष्टि से महापुरुष थे, हम सबके आदर्श थे। प्रश्न यह है कि क्या कोई शरीरधारी परमात्मा हो सकता है? अगर सच में एक घड़े या लोटे में समुद्र का सम्पूर्ण जल आ सकता है तो इस बात का कोई फर्क नहीं पड़ता कि घड़ा सोने का है या लोहे का। सृष्टि में सर्वत्र नियम-सिद्धान्त ही काम करते हैं, सिद्धान्ततः मनुष्य सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान् आदि गुणों से युक्त नहीं हो सकता। निष्कर्षतः हम यह कहना चाहते हैं कि रामपाल और आसाराम का परमात्मा होना निश्चित रूप से एक बहुत बड़ा पाखण्ड है, अन्धविश्वास है तो श्री राम और श्री कृष्ण को परमात्मा का अवतार कहना-मानना भी बहुत बड़ा पाखण्ड और अन्धविश्वास है। हम सबको एक बात गाँठ बाँध लेनी चाहिये कि जब तक श्री राम और श्री कृष्ण आदि महापुरुषों को परमात्मा का अवतार मानकर पूजने, भक्ति करने के पाखण्ड को जीवित रखा जाएगा, तब तक देश और दुनियाँ से बाल योगेश्वर हंस, आसाराम और रामपाल जैसे पाखण्डियों की परम्परा को मिटाया नहीं जा सकेगा। बीज रहेगा तो बेल भी उगेगी-बढ़ेगी और उस पर फूल-फल भी लगेंगे जो आगे बीज भी पैदा करेंगे।

आर्यो! तनिक आप भी अपनी अकर्मण्यता-असफलता पर विचार करना सीख लो। "हम ये कर रहे हैं, हम वो कर रहे हैं।" कहकर अपनी पीठ थपथपाने वालो। 'हम क्या नहीं कर पा रहे' का भी कभी चिन्तन कर लिया करो। ऋषि दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द के हृदय की आग की एक चिनगारी को अपने हृदय में सुलगने-धधकने का अवसर देकर देखो। वे कोई दूसरी दुनियाँ के पुरुष नहीं थे। इसी समाज और राष्ट्र की ऐसी ही परिस्थिति में पल-बढ़ कर उनका व्यक्तित्त्व बना था। उन्होंने जो कुछ लिया यहीं से लिया। समाज व राष्ट्र की लगभग ऐसी ही दुर्दशा तब थी, जिसे देखकर वे चैन की नींद तक नहीं ले पाते थे। एक हम हैं कि सब कुछ देख-सुनकर भी कबूतर की तरह आँख बन्द कर लेते हैं, शतुरमुर्ग की तरह धरती में मुँह धँसा लेते हैं- सोचते हैं संकट टल गया। आर्यो! हमारी अनदेखी से संकट टल जाता तो धरती तल पर कभी कोई समस्या, कोई संकट रहता ही नहीं। आप मानो या न मानो, सच यह है कि भारत की हर समस्या, हर संकट आर्यों के अनार्यपन की उपज हैं। ऋषि दयानन्द के

thearyasamaj.org

अनुयायी कहलाने वाले सिद्धान्तहीन लोगों के कारण ही वेद विद्या के प्रचार-प्रसार का अभियान निष्प्राण होकर रह गया है। यह कोई छोटा अपराध नहीं है, आर्यो! अपने जीवन की उपलब्धियों का सच्चे हृदय से आंकलन करो। देखो कि हमने झूठे और खोखले मान-सम्मान के अलावा आर्यसमाज में आकर क्या पाया?

पत्थर जोड़ने (भवन बनाने) और पत्थरों पर नाम लिखाने से आगे बढ़कर जीवन-निर्माण के क्षेत्र में हमारी उपलब्धि क्या रही? आर्यो! जीवन को घाटे का सौदा मत बनाओ, भवन-निर्माण से जीवन-निर्माण अधिक पुण्यप्रद कर्म है। देश में व्याप्त धार्मिक-पाखण्ड, अन्धविश्वास, भ्रष्टाचार, हिंसा, जातिगत विद्वेष और पारिवारिक बिखराव- उन सब रोगों की एक ही अमोघ औषधि है और वह है वेद विद्या का प्रचार-प्रसार। यह काम केवल और केवल आर्यसमाज ही कर सकता है। संकल्प लो कि हम स्वयं वेद पढ़ेंगे और वेद विद्या के प्रचार-प्रसार में ही अपना तन, मन, धन और समय लगायेंगे। ध्यान रखें जब तक हम स्वयं वेद पढ़ना प्रारम्भ नहीं करेंगे मनोविज्ञान का सिद्धान्त है कि तब तक हम वेद के लिए कुछ भी नहीं कर सकते। वेद प्रचार करने-कराने का दिखावा तो कोई भी कर सकता है, लेकिन सच्चे अर्थों में वेद विद्या के प्रचार-प्रसार में सक्रिय सहयोग व समर्थन देकर आर्य होने का सच्चा प्रमाण, सच्चा आदर्श वही प्रस्तुत कर सकता है जो स्वयं नित्य वेद स्वाध्याय करते हो। मित्रो! क्या आप वेद-स्वाध्याय का व्रत लेकर अपने व विश्व के कल्याण करने की दिशा में छोटा-सा दिखने वाला एक बड़ा कदम उठा रहे हो? यदि हाँ तो लेखक की हार्दिक शुभकामनाएँ सदा आपके साथ हैं, ईश्वर की कृपा, करुणा और दया सदैव आपका मार्ग प्रशस्त करें!!

- महर्षि दयानन्द स्मृति भवन, जोधपुर, राजस्थान

चलभाष- ०७५९७८९४९९९

वेद-गोष्ठी वर्ष २०१४ के पुरस्कार हेतु निबन्ध आमन्त्रित हैं

मुनि स्थिर निधि की ओर से वेद-गोष्ठी में पढ़े जाने वाले निबन्धों को पुरस्कृत करने की योजना है। पुरस्कार राशि निम्न प्रकार निर्धारित है-

प्रथम पुरस्कार - ६१००.०० रु.

द्वितीय पुरस्कार - ४१००.०० रु.

तृतीय पुरस्कार - ३१००.०० रु.

तृतीय पुरस्कार नव लेखकों ३० वर्ष की आयु तक के लिए निश्चित किया गया है।

जिन विद्वानों ने इस वर्ष ऋषि मेले के अवसर पर सम्पन्न वेद-गोष्ठी में निबन्ध वाचन किया है। यदि वे अपने निबन्ध में संशोधन करने के इच्छुक हैं तो वे १ मार्च २०१५ तक अपने संशोधित निबन्ध संयोजक वेद-गोष्ठी, परोपकारिणी सभा, अजमेर के पते पर भेज सकते हैं।

यदि कोई विद्वान् अभी तक अपना निबन्ध नहीं भेज पाये हैं वे भी १ मार्च २०१५ तक इसी विषय पर निबन्ध लिखकर भेज सकते हैं।

पश्चात् निबन्ध चयन समिति को भेजे जायेंगे। उनका निर्णय अन्तिम और मान्य होगा। पुरस्कार ऋषि मेला समारोह में प्रदान किये जायेंगे।

वेद-गोष्ठी का विषय "भारतीय मत सम्प्रदाय और वेद"

- संयोजक वेद-गोष्ठी

जो विद्वान् लोग परोपकार बुद्धि से विद्या का विस्तार करने, सुगन्धि, पुष्टि, मधुरता रोगनाशक गुणयुक्त पदार्थों का यथायोग्य मेल अग्नि के बीच में उनका होम कर शुद्ध वायु वर्षा का जल वा ओषधियों का सेवन करके शरीर को आरोग्य करते हैं वे इस संसार में अत्यन्त प्रशंसा के योग्य होते हैं।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५८

यज्ञ आदि व्यवहारों के बिना गृहाश्रम में सुख नहीं होता।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५९

thearyasamaj.org

पुस्तक-समीक्षा

सत्यार्थप्रकाश का आजतक का सर्वाधिक श्रमयुक्त शोध संस्करण

पुस्तक का नाम - सत्यार्थप्रकाश, महर्षि दयानन्द सरस्वती रचित (शोध संस्करण, दो भागों में)

सम्पादक एवं शोधकर्ता - डॉ. सुरेन्द्र कुमार (मनुस्मृति भाष्यकार)

पृष्ठ संख्या - पूर्वार्ध ५१२, उत्तरार्ध

मूल्य - दोनों भागों का १२००/-

प्रकाशक - सत्यधर्म प्रकाशन द्वारा आचार्य सत्यानन्द नैष्ठिक कैंसर हस्पताल गुरुकुल झज्जर, रेवाड़ी रोड, जिला झज्जर (हरियाणा)

सुन्दर कागज और आकर्षक साज-सज्जा में प्रकाशित सत्यार्थप्रकाश का यह अब तक का सर्वाधिक श्रमयुक्त और शोधपूर्ण संस्करण है। सन् १८७५ में प्रकाशित सत्यार्थप्रकाश (प्रथम संस्करण) का संशोधन एवं पुन: लेखन करा महर्षि जी ने द्वितीय संस्करण तैयार कराया, जो सन् १८८४ में प्रकाशित हो पाया। लिपिकरों और मुद्रणकर्त्ताओं के प्रमाद से उसमें अवशिष्ट भाषागत त्रुटियों के संशोधन की शुरुआत उसकी तृतीय आवृत्ति से ही हो गई थी। परोपकारिणी सभा ने उसके लिए समय-समय पर कई समितियाँ बनाई जिसमें आर्यसमाज के दिग्गज विद्वान् रहे। जब स्वतन्त्र संस्करण छपने लगे तो स्वामी वेदानन्द सरस्वती, पं. भगवद्दत्त, पं. युधिष्ठिर मीमांसक, पं. जगदेवसिंह सिद्धान्ती सदृश विद्वानों ने अपने-अपने दृष्टिकोण से संशोधन किये। सार्वदेशिक सभा, प्रान्तीय आर्यसभाओं, ट्रस्टों, न्यासों, गुरुकुलों तथा अन्य प्रकाशकों ने भी स्वेच्छापूर्वक संशोधन करके अपने संस्करण प्रकाशित किये। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि सभी संस्करण एक-दूसरे से भिन्न होते गये और एक प्रकाशक के सभी संस्करण भी आपस में नहीं मिलते। सत्यार्थप्रकाश का अधिकाधिक प्रचार-प्रसार हो, इस भावना से परोपकारिणी सभा ने अन्य प्रकाशकों को प्रकाशन की छूट दी थी किन्तु उन्होंने इस छूट का दुरुपयोग किया और अन्ततः कुछ भी संशोधन करने का अपना अधिकार समझ लिया। सबके संशोधन विषयक मतान्तर होने से यह विषय विवाद का रूप लेता गया।

इन सब विवादों को समाप्त करने के लिए परोपकारिणी सभा ने १८८४ के द्वितीय संस्करण और उसकी मुद्रणप्रति के ऋषि संशोधित पाठों को ग्रहण करके द्वितीय संस्करण के मूल-हस्तलेख को आधार बनाकर ३७वाँ संस्करण प्रकाशित किया। यह मूल-हस्तलेख ऋषि द्वारा बोल कर लिखाया गया था अर्थात् यह उनकी वाणी है और फिर दो बार ऋषि ने अपने हाथ से उसका संशोधन भी किया हुआ है। अधिकांश सम्पादकों ने इसी के पाठों के आधार पर द्वितीय संस्करण में संशोधन भी किये हैं। दु:ख की बात यह है कि कुछ आर्य विद्वानों ने एक गुट बनाकर उस ऋषि-वाणी का भी विरोध किया और विवाद को भी बढ़ाया।

अब डॉ. सुरेन्द्र कुमार ने मूलप्रति, मुद्रणप्रति और द्वितीय संस्करण (१८८४) को मुख्य आधार बनाकर और अन्य २५ से अधिक संस्करणों का तुलनात्मक अध्ययन करके सत्यार्थप्रकाश का पाठ निर्धारण किया है। विशेष उल्लेखनीय बिन्दु यह है कि जहाँ-जहाँ प्रतियों में और संस्करणों में पाठान्तर या पाठत्रुटि है, उसका टिप्पणी में उल्लेख किया है। पाठक तुलनात्मक परीक्षण करके स्वयं भी जान सकते हैं कि किस सम्पादक या प्रति का क्यों पाठ सही है और क्यों सही नहीं है। इनके अतिरिक्त टिप्पणी में गूढ़ ऐतिहासिक और शंकामय स्थलों पर सप्रमाण प्रकाश डाला है। यद्यपि सम्पादक ने अपने शोध संस्करण में परोपकारिणी के मूलप्रति संस्करण की त्रुटियाँ भी प्रदर्शित की हैं, तथापि उन्होंने अधिकांश समाधान मूलप्रति के आधार पर किये हैं जिनसे इस बात की पुष्टि हो जाती है कि परोकारिणी का ३७वाँ संस्करण प्रकाशित करने का निर्णय उचित था। यह संस्करण नहीं छपता तो, सत्यार्थप्रकाश विषयक शोध न आगे बढ़ता, न पूर्ण होता।

इस प्रकार इस शोध कार्य से किसी को सहमति-असहमति रखने का अधिकार है परन्तु यह कार्य शोध की दिशा में मील का पत्थर सिद्ध होगा यह निश्चित है।

सत्यार्थप्रकाश के इतिहास में इस संस्करण में पहली बार यह कार्य किया गया है कि सम्पादक ने पाठकों को महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा अपने हाथ से किये/लिखे संशोधनों से पाठकों को परिचित कराया है। वह इस प्रकार है कि जिन शब्दों या पाठों के नीचे सीधी रेखा अंकित है वे मूलहस्तलेख में महर्षि जी द्वारा संशोधित पाठ हैं। जिन शब्दों/पाठों के नीचे वक्र रेखा अंकित है वे मुद्रण प्रति में संशोधित पाठ हैं। पाठकों की सुविधा के लिए संक्षिप्ताक्षर

thearyasamaj.org

सूची, प्रमाणानुक्रमणी, प्रमुख शब्दानुक्रमणी, ऋषि द्वारा सत्यार्थप्रकाश में उद्धृत पुस्तकों की अनुक्रमणी, आयतानुक्रमणी आदि दी गई हैं। अन्त में ऋषि के उद्धरणीय-स्मरणीय वचनों का संग्रह भी उपादेय है।

ग्रन्थ के आरम्भ में १५९ पृष्ठ का 'सत्यार्थप्रकाश-मीमांसा' नामक समीक्षा भाग है जिसमें सत्यार्थप्रकाश की रचना का इतिहास, संशोधन-विषयक पक्ष-विपक्ष का विवेचन और प्रमुख संस्करणों के संशोधनों की समीक्षा, सत्यार्थप्रकाश की यथार्थ स्थिति का सप्रमाण दिग्दर्शन, सम्भावित आरोपों अथवा शंकाओं का समाधान, हस्तलेखों का परिचय, महर्षि जी के लिपिकरों और लेखकों द्वारा की गई त्रुटियों आदि विषयों पर सप्रमाण और विस्तार से प्रकाश डाला गया है।

कितने ही प्रकाशक स्वयं सत्यार्थप्रकाश में संशोधन किये बैठे हैं और दूसरों के संशोधनों का विरोध करते हैं, सम्पादक ने मीमांसा भाग में तथ्य प्रस्तुत करके उनको उनका आइना दिखा दिया है। इतना विस्तृत, गम्भीर और श्रमसाध्य शोध आज तक सत्यार्थप्रकाश पर नहीं हुआ है। पाठक अब यदि सत्यार्थप्रकाश-विषयक किसी विवाद, आरोप, शंका, जिज्ञासा का उत्तर चाहेंगे तो प्राय: वह सब इस शोध संस्करण में मिल जायेगा और वह भी प्रमाणों के साथ। इस ऐतिहासिक कार्य के लिए डॉ. सुरेन्द्र कुमार बधाई के पात्र हैं। ऐसे शोधग्रन्थ बार-बार नहीं छप पाते, अत: सभी को इसकी प्रति सुरक्षित कर लेनी चाहिए।

- डॉ. धर्मवीर, कार्यकारिणी प्रधान,
परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर

वैदिक साहित्य पर विशेष छूट

दानी महानुभावों के विशेष सहयोग से वैदिक पुस्तकालय, अजमेर द्वारा प्रकाशित रु. १६३५/- मूल्य की निम्न पुस्तकों का एक सैट ग्राहकों को आधे मूल्य (५० प्रतिशत) में अर्थात् रु. ८१७/- में दिया जा रहा है। पुस्तकों को डाक द्वारा मँगाने पर डाक व्यय के रु. १८३/- अतिरिक्त सहित कुल राशि रु. १०००/- में ग्राहकों को देय होगा।

पुस्तकों के सैट उपलब्धता रहने तक प्राथमिकता के आधार पर देय होंगे।

क्र. सं.	पुस्तक सं.	पुस्तक का नाम	मूल्य
१.	१२	ऋग्वेद भाषा भाष्य-१२ पुस्तक-१ सैट	६१०.००
२.	२	यजुर्वेद भाषा भाष्य-२ पुस्तक-१ सैट	४७५.००
३.	३	दयानन्द ग्रन्थमाला-३ पुस्तक- १ सैट	५५०.००
	१७	योग	१६३५.००

पुस्तकें मँगाने हेतु धनराशि-एम.ओ., डिमाण्ड ड्राफ्ट या ऑनलाईन द्वारा

खातेदार-वैदिक पुस्तकालय, अजमेर

बचत खाता संख्या- 0008000100067176,

बैंक- पंजाब नेशनल बैंक, कचहरी रोड, अजमेर

आई.एफ.एस.सी. संख्या PUNB 0000800 के द्वारा भेज सकते हैं।

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

thearyasamaj.org

वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत

वेदभाष्य, वेदभाषाभाष्य, मूलवेद, वेदांगप्रकाश और वैदिक साहित्य

पिछले अंक का शेष भाग.......

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
१८५.	श्वसन क्रियाएं एवं प्राणायाम (सी.डी.)	
१८६.	मोटापा (सी.डी.)	४०.००
१८७.	योगनिद्रा (सी.डी.)	३०.००
१८८.	ध्यान (सी.डी.)	
१८९.	योगनिद्रा (कैसेट)	३०.००
१९०.	ध्यान (कैसेट)	३०.००

श्री रावसाहब रामविलास शारदा

१९१.	आर्य धर्मेन्द्र जीवन (सजिल्द) (स्वामी दयानन्द जी का जीवन चरित्र)	१००.००

डॉ. रामप्रकाश आर्य

१९२.	महर्षि दयानन्द सरस्वती (जीवन एवं उनकी हिन्दी रचनाएं)	२५०.००

महर्षि गार्ग्य

१९३.	सामपद संहिता सजिल्द (पदपाठः)	२५.००

डॉ. ब्रह्मानन्द शर्मा

१९४.	वेदार्थ विमर्शः (वेदार्थ पारिजात खण्डनम्)	२५.००
१९५.	डॉ. भवानीलाल भारतीय अभिनन्दन ग्रन्थ (बढ़िया)	५१.००
१९६.	डॉ. भवानीलाल भारतीय अभिनन्दन ग्रन्थ (साधारण)	३१.००

महामहोपाध्याय पं. आर्यमुनि

१९७.	वाल्मीकि रामायण-(सजिल्द) आर्य टीका सहित (प्रथम भाग)	१६०.००
१९८.	वाल्मीकि रामायण-(सजिल्द) आर्य टीका सहित (द्वितीय भाग)	१६०.००

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
१९९.	महाभारत आर्य टीका (प्रथम भाग)	२००.००
२००.	महाभारत आर्य टीका (द्वितीय भाग)	२५०.००

Prof. Tulsi Ram

201.	The Book Of Prayer (Aryabhivinaya)	35.00
202.	Kashi Debate on Idol Worship	20.00
203.	A Critique of Swami Narayan Sect	20.00
204.	An Examination of Vallabha Sect	20.00
205.	Five Great Rituals of the Day (Panch Maha Yajna Vidhi)	20.00
206.	Bhramochhedan (New Edition)	25.00
207.	Bhranti Nivaraṇa	35.00
208.	**Atmakatha**- Swami Dayanand Saraswati	20.00
209.	Bhramochhedan	5.00
210.	Chandapur Fair	5.00

DR. KHAZAN SINGH

211.	Gokaruna Nidhi	12.00

DEENBANDHU HARVILAS SARDA

212.	Life of Dayanand Saraswati	200.00

SWAMI SATYA PRAKASH SARASWATI

213.	Dayanand and His Mission	5.00
214.	Dayanand and interpretation of Vedas	5.00
२१५.	पवित्र धरोहर (सी.डी.)	५१.००

आचार्य उदयवीर शास्त्री

२१६.	जीवन के मोड़ (सजिल्द)	२५०.००

अन्य लेखकों के ग्रन्थ–निम्न पुस्तकों पर कमीशन देय नहीं है।

thearyasamaj.org

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
	श्री गजानन्द आर्य	
२१७.	वेद सौरभ	१००.००
२१८.	Gokarunanidhi (Eng.)	२५.००
	डॉ. सुरेन्द्र कुमार (भाष्यकार एवं समीक्षक)	
२१९.	मनुस्मृति	३००.००
२२०.	महर्षि दयानन्द वर्णित शिक्षा पद्धति	१५०.००
	सत्यानन्द वेदवागीश:	
२२१.	दयानन्द वेदभाष्य भावार्थ प्रकाश (उत्तरखण्ड)	३००.००
२२२.	दयानन्द वेदभाष्य भावार्थ प्रकाश (पूर्वखण्ड)	३५०.००
	डॉ. वेदपाल सुनीथ	
२२३.	माध्यन्दिन शतपथीय यूप ब्राह्मणों का भाष्य (अजिल्द)	५०.००
२२४.	शतपथ ब्राह्मण के पशुयाग का भाष्य(अजिल्द)	७०.००
२२५.	शतपथीययूप ब्राह्मण का भाष्य एवं शतपथ ब्राह्मण के पशुयाग का भाष्य (सजिल्द)	१५०.००
२२६.	यजुर्वेद–भाष्य विवरणम् (विशिष्ट संस्करण)	५०.००
२२७.	यजुर्वेद–भाष्य विवरणम् (साधारण संस्करण)	२५.००
	आचार्य सत्यव्रत शास्त्री	
२२८.	उणादिकोष	८०.००
२२९.	दयानन्द लहरी	५०.००
	प्रो. रामप्रसाद वेदालंकार	
२३०.	वेदाध्ययन (भाग–१)	६.००
२३१.	वेदाध्ययन (भाग–२)	७.००
२३२.	वेदाध्ययन (भाग–१०)	६.००
२३३.	प्रार्थना सुमन	४.००
२३४.	ईश्वर! मुझे सुखी कर	
२३५.	कौन तुझको भजते हैं?	८.००
२३६.	पावमानी वरदा वेदमाता	९.००
२३७.	प्रभात वन्दन	६.००
२३८.	भक्ति भरे भजन	११०.००
२३९.	विनय सुमन (भाग–३)	६.००
२४०.	वेद सुधा	८.००
२४१.	वेद पढ़ो और पढ़ाओ	१००.००
२४२.	वैदिक रश्मियाँ (भाग–२)	६.००
२४३.	वैदिक रश्मियाँ (भाग–३)	५.००
२४४.	वैदिक रश्मियाँ (भाग–४)	९.००
२४५.	वैदिक रश्मियाँ (भाग–५)	६.००
२४६.	Quest for the Infinite	20.00
२४७.	वैदिक आदर्श परिवार (बड़ा आकार)	१५०.००
	श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु	
२४८.	गंगा ज्ञान धारा (भाग–१)	
२४९.	गंगा ज्ञान धारा (भाग–२)	१६०.००
२५०.	गंगा ज्ञान धारा (भाग–३)	१७०.००
२५१.	अमर कथा पं. लेखराम	६०.००
२५२.	कवि मनीषी पं. चमूपति	१६०.००
२५३.	कुरान सत्यार्थ प्रकाश के आलोक में	२००.००
२५४.	निष्कलंक दयानन्द	१६०.००
२५५.	महता जैमिनी	१५०.००
२५६.	कुरान वेद की छांव में	१५०.००
२५७.	जम्मू शास्त्रार्थ	३०.००
२५८.	महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव	२०.००
२५९.	श्री रामचन्द्र के उपदेश	२५.००
२६०.	धरती हो गई लहुलुहान	३०.००
	विविध ग्रन्थ	
२६१.	नित्यकर्म विधि तथा भजन कीर्तन	२०.००
२६२.	उपनिषद् दीपिका	७०.००
२६३.	आर्य समाज के दस नियम	१०.००
२६४.	मद्यनिषेध शिक्षित शतकम्	१५.००
२६५.	आर्यसमाज क्या है ?	८.००
२६६.	जीवन का उद्देश्य	२०.००

thearyasamaj.org

२६७.	वेदोपदेश	३०.००
२६८.	सत्यार्थ प्रकाश का समीक्षात्मक अध्ययन	२०.००
२६९.	भगवान् राम और राम-भक्त	२५.००
२७०.	जीवन निर्माण	२५.००
२७१.	१०० वर्ष जीने के साधन नित्यकर्म	२५.००
२७२.	दयानन्द शतक	८.००
२७३.	जागृति पुष्प	८.००
२७४.	त्यागवाद	२५.००
२७५.	भस्मान्तं शरीरम्	८.००
२७६.	जीवन मृत्यु का चिन्तन	२०.००
२७७.	ब्रह्मचर्य का वैज्ञानिक स्वरूप	१०.००
२७८.	कर्म करो महान बनो	१४.००
२७९.	अष्टाध्यायी सूत्रपाठ	५०.००
२८०.	आनन्द बहार शायरी	१५.००
२८१.	वैदिक वीर गर्जना	२५.००
२८२.	पर्यावरण विज्ञानम्	२०.००

DR. HARISH CHANDRA

283	The Human Nature & Human Food	12.00
284.	Vedas & Us	15.00
285.	What in the Law of Karma	150.00
286.	As Simple as it Get	80.00
287.	The Thought for Food	150.00
288.	Marriage Family & Love	15.00
289.	Enriching the Life	150.00

डॉ. वेदप्रकाश गुप्त

२९०.	दयानन्द दर्शन	६०.००
२९१.	Philoshophy of Dayanand	150.00
२९२.	महर्षि दयानन्द का समाज दर्शन	२०.००

श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज

२९३.	आर्य सिद्धान्त और सिख गुरु	६०.००
२९४.	आध्यात्मिक चिन्तन के क्षण (आचार्य सत्यजित् जी)	४०.००

सत्यार्थ प्रकाश का प्रचार प्रसार

गत विश्व पुस्तक मेले में सभा द्वारा पांच हजार सत्यार्थप्रकाश (हिन्दी), दो हजार सत्यार्थप्रकाश (अंग्रेजी), ऋषि दयानन्द की जीवनी पाँच हजार, दो हजार सी.डी. का निःशुल्क वितरण किया। जिसकी सज्जनों द्वारा बहुत प्रशंसा की गई। अब सज्जनों का फिर उसी प्रकार के कार्यक्रम की मांग कर रहे हैं।

इस बार सभा ने कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए सत्यार्थप्रकाश को चार भाषाओं में वितरित करने की योजना बनाई है, क्रमशः हिन्दी, अंग्रेजी, पंजाबी, उर्दू का सत्यार्थप्रकाश प्रकाशन की प्रक्रिया में है।

ऋषि जीवनी भी अंग्रेजी, हिन्दी दोनों भाषाओं में तैयार कराई जा रही है। सभी धर्मानुरागियों से निवेदन है, इस कार्य के लिए आप जितना अधिक सहयोग प्रदान करेंगे। सभा उतने ही विशाल रूप में इस कार्यक्रम को सम्पन्न करेगी। पूर्व की भाँति आपका सहयोग व समर्थन प्राप्त होगा।

सहयोग राशि निम्न क्रमांक के खातों में जमा कराई जा सकती है अथवा बैंक ड्राफ्ट, चेक द्वारा प्रेषित कर कार्यालय में जमा कराई जा सकती है।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर। IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या -10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर। IFSC - SBIN0007959

तर्क के बिना कोई भी विद्या किसी मनुष्य को नहीं होती और विद्या के बिना पदार्थों से उपयोग भी कोई नहीं ले सकता।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५६

thearyasamaj.org

ऊमर काव्य

- ऊमरदान लालस

राजस्थान के गौरव राजस्थानी भाषा के कवि उमरदान जी का अमर काव्य हमें परोपकारिणी सभा के सम्माननीय सदस्य डॉ. खेतलखानी जी की कृपा से प्राप्त हुआ। इस पुस्तक का तीसरा संस्करण १९३० में प्रकाशित हुआ था। इसमें उमरदान जी की अनेक रचनाओं का संग्रह है। इस पुस्तक के पृष्ठ संख्या ६० से ९४ तक 'दयानन्द री दया' नाम से उनकी रचना प्रकाशित है। कवि और काव्य दोनों ही महत्त्वपूर्ण होने से पाठकों के लाभार्थ दयानन्द दर्शन को प्रकाशित कर रहे हैं। यह एक इतिहास का भाग है। पाठक लाभ उठा सकेंगे। - सम्पादक

पिछले अंक का शेष......

नमो हरिराम नमो हरिराम,
हरोहर ब्रह्म समो हरिनाम ॥४१॥
अथा सुपने सुख संपति सोइ,
कृपा हरिराम बिना नहिं कोइ।
सुनूँ हरिराम गुनूँ[1] किय साफ,
महाप्रभु मांगत आगन माफ ॥४२॥
समै कुसमैं सुर सारत सार,
पुकारत आरत वंत[2] पुकार।
सुखी करिये अति आप समान,
दुखो शरणागत ऊमरदान ॥४३॥

दयानन्द वन्दना

[पद राग भैरव–ताल चरचरी]

नमो स्वामी दयानन्द[3] दिव्य[4] ज्ञानदाता।
आर्य्य ध[6] आप बिना हाथ नहीं आता ॥ नमो०टेर

१—कसूर। २—दुःखी। ३—इनका जन्म वि० सं० १८८१ (सन् १८२४ ई०) में काठियावाड़-गुजरात की मोरवी रियासत के टंकारा गांव में औदिच्य ब्राह्मण कृष्णजी (अम्बाशंकर) के घर हुआ। स्वामी शंकराचार्य (सं० ८४४–८७६ वि०) के बाद वेदों के महान प्रचारक यही माने जाते हैं। इन्होंने ही सर्व प्रथम सं० १९३२ चैत्र सुदि ५ शनिवार (ता० १०-४-१८७५ ई०) को बम्बई में और द्वि० ज्येष्ठ सुदि १४ रविवार सं० १९३४ (ता० २४-६-१८७७ ई०) को लाहौर में धार्मिक क्रान्तिकारी संस्था "आर्यसमाज" की स्थापना करके भारतवर्ष में हिन्दू संगठन की नींव जमाई। ४—चमत्कार पूर्ण।

hearyasamaj.org

वेद ध्वनी हाट बाट, दुष्टन के थाठ[1] दाठ[2] ,
कलियुग को काट, जुग सत्य ना सुझाता ॥नमो०१
कुल को बनतो कुठार, बंस को देतो बिगार,
चारन[3] बरन चारु[4] , छार[5] में छिपाता ॥नमो०२

१—समूह, थोक । २—उपटना, दबाना । ३—राजपूताने में यह जाति राजपूतों की याचक है जो उनके यशको कविता रूप में प्रकट करती है और ख्यात (इतिहास) पीढियां भी बताती है । ये कुल चार हिस्सों में विभक्त हैं । (१) मारू, (२) काछेला या परजिया, (३) सोरठिया, और (४) तुम्बेल । देश भेद से ये नाम हुए हैं । मारवाड़ यानी राजपूताना, मालवा व सिंध में रहनेवाले चारण "मारू चारण" कहलाते हैं, कच्छ देश के काछेला, सौराष्ट्र यानी काठियावाड़ के सोरठिया और ऐसे ही तुम्बेल जो जामनगर की तरफ बड़ी संख्या में हैं । मारवाड़ में इनके एकसौ बीस गोत हैं इससे चारणों की बिरादरी बीसोतरा या बीसोत्रा भी कहलाती है । ये लोग अपने को देव ऋषि (देवयोनि) की सन्तान और पहिले स्वर्ग (वैकुण्ठ) ही में रहना बताते हैं । महाभारत के अनुसार स्वर्ग से मुराद शायद हिमालय पार त्रिविष्टप (तिब्बत) और उसके पास के देश से हो और सम्भव है इनका असली स्थान वहीं हो । मारवाड़ी भाषा की कविता जो डिंगल कहलाती है उसी में ये लोग अपनी रचना करते हैं । डिंगल (असंस्कृत) बोली का साहित्य ८वीं सदी का मिलता है और ७वीं सदी के महाकवि बाण भट्ट के प्रसिद्ध "कादम्बरी" ग्रंथ में भी इस जाति का वर्णन है । ज्ञात होता है उस समय भी चारणों के गीत और ख्यात प्रचलित थे और इनकी संस्कृत के कवियों (महाभट्टों) से प्रतिद्वन्द्विता होने लग गई थी (देखो नागरीप्रचारिणीपत्रिका भाग १ अंक २ पृ० २३१ नया संस्करण सं० १९७० वि०) । ४—अच्छा, सुन्दर । ५—राख ।

thearyasamaj.org

व्याहृती गायत्री, वृती, धारत नहीं धर्म धृती,[1]
श्रुती श्रो स्मृती सरब धूर में धसाता ॥नमो० ३
बकतो मैं बाद बाद, बूझत करतो विवाद,
सीतलप्रसाद सर्व जात को जिमाता ॥नमो० ४
राधिका कृष्ण रास, वृन्दावन ब्रजबिलास,
गिनका गज अजांमेल[2] गीध[3] पद गाता ॥नमो० ५
राम नाम रंग रिल,[4] कामनि कुसंग किल,
मोडन[5] के संग मिल, माजनो[6] गमाता ॥नमो० ६
छत्री कुल धर्म छेक, कायर कर देत केक[7],
टारत[8] नहिं एक टेक, पाव को पुजाता ॥ नमो० ७
भामनि[9] निज छोड़ भोग, परदारा मनका प्रयोग,
जानता नहिं जुगति जोग जन्म हार जाता ॥नमो० ८
कुलको वह स्वधीन और ठगके अधीन,
ऊमरदांन महादीन लालस[10] लुट जाता ॥ नमो० ९

१—धीरज। २—एक पापी जिसकी भागवत में कथा है। ३—जटायु से अर्थ। ४—मिलना। ५—बनावटी साधु। ६—प्रतिष्ठा। ७—कितने ही। ८—टालना। ९—स्त्री। १०—इस काव्य के रचयिता का यह गोत-अल्ल है।

thearyasamaj.org

२

[पद राग कालिंगड़ा–ताल दीपचन्दी]

नहीं जग माला नीकी[१] रे,
जाला नहीं काटे जी की रे॥ टेर॥

धाड़ा[२] पाड़ कर रटके[३] धूरत धन पटके धरधूंस[४] ।
नटके[५] साधू बने निराला, सटके[६] माला सूंस ॥नहीं१
उर अन्तर में नहीं उजाला, ढाला ज्यांरा ढोर[७] ।
मिनखां[८] में फेरे ठग माला, चाला-गारा[९] चोर॥नहीं२
ताला तोड़ करे मूँ काला, गाला[१०] घाले[११] गूढ ।
माला नेणां वाला[१२] भोला, माला फेरे मूढ॥नहीं०॥३॥
अपणी सरधा खोय अभागी, सपणी[१३] आदत सोग।
तपणी[१४] पर बैठे तावड़िये,[१५] जपणी[१६] फेरण जोग॥४॥
परदारा सूँ फँस भी जावे, हँस भी जावे हेर ।
काम पड़े तब नस भी काटे, फेरे तसबी[१७] फेर ॥नहीं॥५
धोला बुगला ध्यान लगावे, खावे मछियाँ खूब ।
पापी पल पल पाप कमावें, डबके जावे डूब ॥नहीं०॥६

१—अच्छी। २—डाका। ३—भागना। ४—जोरसे गिराना। ५—स्वांगी। ६—चट पट, तुरन्त । ७—पशु । ८—मनुष्यों। ९—चालाक । १०—खड्डा । ११—डालना । १२—अनसमझ बालक। १३—सर्पनी। १४—धूनी। १५—धूप। १६—माला । १७—माला।

शेष भाग अगले अंक में......

thearyasamaj.org

जिज्ञासा समाधान - ८१

- आचार्य सोमदेव

(क) सत्यार्थप्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में वर्णानुसार सन्तान-परिवर्तन की व्यवस्था दी है परन्तु ऋग्वेद में इसका निषेध है-

नहि ग्रभायारणः सुशेवोऽन्योदर्यो मनसा मन्तवा उ।
अधा चिदोकः पुनरित्स एत्या नो वाज्यभीषाळेतु नव्यः।।

- ऋ. ७-४-८

इस स्थिति में शंका उत्पन्न होना स्वाभाविक है कि महर्षि जी ने किस आधार पर सन्तान-परिवर्तन की व्यवस्था दी है तथा अब समाधान कैसे होगा?

२. यजुर्वेद के '**सत्याःसन्तु यजमानस्य कामाः**' मन्त्रांश को बदलकर कुछ पुरोहित आशीर्वाद रूप में सत्याः सन्तु यजमानायोः अथवा यजमानानां बोलते हैं। मन्त्रों में परिवर्तन का अधिकार उन्हें हैं या नहीं?

३. सन्ध्या के अन्तर्गत मार्जन मन्त्रों में प्रथम कहा है- **ओं भूः पुनातु शिरसि** अर्थात् हे ईश! आप प्राणों के भी प्राण हैं। मेरा शिर पवित्र करें। इस में शंका है कि प्राणों का सम्बन्ध नासिका से है। भूः का सम्बन्ध नासिकाओं से उचित प्रतीत होता है- '**ओं भूः पुनातु प्राणयोः**' अथवा '**ओं भूः पुनातु नासिक्योः।**' कृपया '**ओं भूः पुनातु शिरसि**' में से भूः व शिरसि की संगति स्पष्ट कीजिएगा।

४. इसी प्रकार मार्जन मन्त्रों के अन्तर्गत तृतीय मन्त्र पर शंका है- **ओं स्वः पुनातु कण्ठे।** अर्थात् हे सुखस्वरूप प्रभो! अपने उपासकों को सुख प्रदान करने हारे हो।

मेरे कण्ठ को सुख प्रदान करो ....। यदि यह मन्त्र ऐसे होते तो अच्छा होवे- **ओं स्वः पुनातु शिरसि।** शिर में शुद्धि हो, विचारों में शुद्धि हो तो सारी शुद्धि स्वतः होगी। मनुष्य विचारों को अपवित्र बनाता है तो शेष सब अशुद्ध व अपवित्र बनता है। शिर पवित्र बने बिना सुख नहीं आएगा।

उपरोक्त दोनों वेद मन्त्रांश नहीं जान पड़ते। अतः इन में परिवर्तन करना वेद में परिवर्तन नहीं माना जाएगा परन्तु ऐसा तब प्रश्न उत्पन्न होगा, जब मेरा विचार संगत माना जाएगा। समाधान दीजिएगा।

- इन्द्रजित् देव चूना भट्ठिया, सिटी सैन्टर के निकट, यमुनानगर-१३५००१ (उ.प्र.)

समाधान (क)- आपकी जिज्ञासा, महर्षि के द्वारा वर्णित वर्णानुसार सन्तान होनी चाहिए, इस पर है। यदि ब्राह्मण कुल में उत्पन्न क्षत्रिय गुण कर्म वाला पुत्र है तो वह क्षत्रिय वर्ण का कहलावे। और ऐसा क्षत्रिय परिवार जिसका पुत्र ब्राह्मण गुण कर्म वाला है, वह ब्राह्मण वर्ण का कहावे। वे दोनों आपस में पुत्रों को बदल लें ऐसा अन्य वर्णों के लिए भी है। दूसरा वेद में कहा अपने गोत्र में उत्पन्न को ही ग्रहण करे। इन दोनों स्थलों को देखने पर आपकी जिज्ञासा स्वाभाविक है।

पहले हम यहाँ महर्षि के दोनों स्थलों को दे रहे हैं।

नहि ग्रभायारणः सुशेवोऽन्योदर्यो मनसा मन्तवा उ।
अधा चिदोकः पुनरित्स एत्या नो वाज्यभीषाळेतु नव्यः।।

-ऋ. ७.४.८

पदार्थ- हे मनुष्य! जो (अरणः) रमण न करता हुआ (सुशेवः) सुन्दर सुख से युक्त (अन्योदर्य्यः) दूसरे के उदर से उत्पन्न हुआ हो (सः) वह (मनसा) अन्तःकरण से (ग्रभाय) ग्रहण के लिए (नहि) नहीं मानने योग्य है (चित्, उ, पुनः इत्) भीर भी वह (ओकः) घर को नहीं (एति) प्राप्त होता है (अथ) उसके अनन्तर जो (नव्यः) नवीन (अभीषाड्) अच्छा सहनशील (वाजी) विज्ञान वाला (नः) हमको (आ, एतु) प्राप्त हो।

भावार्थ- हे मनुष्यो! अन्य गोत्र में अन्य पुरुष से उत्पन्न हुए बालक को पुत्र करने के लिए नहीं ग्रहण करना चाहिए क्योंकि वह घर आदि का दाय भागी नहीं हो सकता किन्तु जो अपने शरीर से उत्पन्न वा अपने गोत्र से लिया हुआ हो वही पुत्र वा पुत्र का प्रतिनिधि होवे।

दूसरा स्थल सत्यार्थप्रकाश से है- ''प्रश्न- जो किसी के एक ही पुत्र वा पुत्री हो, वह दूसरे वर्ण में प्रविष्ट हो जाये तो उसके माँ-बाप की सेवा कौन करेगा और वंशच्छेदन भी हो जायेगा, इसकी क्या व्यवस्था होनी चाहिए? उत्तर- न किसी की सेवा का भंग और न वंशच्छेदन होगा, क्योंकि उनको अपने लड़के-लड़कियों के बदले स्ववर्ण के योग्य दूसरे सन्तान, विद्यासभा और राजसभा की व्यवस्था से मिलेंगे इसलिए कुछ भी अव्यवस्था नहीं होगी।'' सत्यार्थप्रकाश समुल्लास ४। इन दोनों स्थलों में विरोध दिख रहा है, यथार्थ में कोई विरोध नहीं है। वेद ऊँची स्थिति को कह रहा है और ऋषि आपत् स्थिति में एक अन्य विकल्प दे रहे हैं कि वेद के अनुसार यदि स्वगोत्र की सन्तान न

thearyasamaj.org

मिल रही हो तो स्ववर्ण के गुण कर्म वाली सन्तान को अपना लें।

इस विषय में व अन्य प्रश्नों के उत्तर के लिए आर्यसमाज के योग्य विद्वान् **आचार्य आनन्द प्रकाश जी** (अलियाबाद, तेलंगाना) ने जो विचार हमें लिखकर दिये हैं जो कि हमें उचित लग रहे हैं, उनको यहाँ आपके समाधान हेतु प्रस्तुत कर रहे हैं।

"(१) सबसे अच्छा तो वह है, कि जो अपने वर्ण के गुण कर्मों से युक्त भी हो और आत्मज भी हो अर्थात् अपने से उत्पन्न भी हो, क्योंकि बन्धु-बान्धवों में उससे किसी का विरोध नहीं होता अर्थात् सबको वह स्वीकार्य होता है।

(२) यदि अपना पुत्र न हो, तो जो अपने गोत्र का अपने वर्ण के गुण कर्म से युक्त हो उसे अपना सकते हैं।

(३) तीसरी स्थिति यह है कि यदि अपना वा अपने गोत्र में भी स्ववर्ण के योग्य न हो तो अपने गोत्र से भिन्न दूसरे की सन्तान अपने गुण कर्म से युक्त होने पर, उसे अपना लेवें।" यह आपत स्थिति है, श्रेष्ठ स्थिति तो पूर्व-पूर्व वाली है। यह इसलिए कि जो प्रश्न उठाया था- "जो किसी के एक ही पुत्र....... सेवा कौन करेगा और वंशच्छेदन भी हो जायेगा......।" इस स्थिति के लिए महर्षि ने यह व्यवस्था रखी है।

इस प्रकार से यदि दोनों स्थलों को देखेंगे तो जो विरोध दिख रहा है वह विरोध नहीं दिखेगा। फिर भी इस विषय में कोई इससे अच्छा समाधन करना चाहे तो उसका स्वागत है।

(ख) दूसरा प्रश्न आपका '**सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः**' -य. १२.४४। इस मन्त्रांश के 'यजमानस्य' पद पर है। इस मन्त्र के 'यजमानस्य' पद में जाति (समूह को शास्त्रीय भाषा में जाति कहते हैं) में एक वचन समझना चाहिए, जिससे एक वा अनेक यजमानों के लिए यह वाक्य ठीक बैठ जाता है। पुनरपि यदि कोई इस पद को 'व्यक्ति' (एक इकाई) रूप में बोलना चाहें और 'जाति' में एकत्व का ज्ञान न हो, तो 'यजमानयोः' या 'यजमानानाम्' का प्रयोग भी कर सकते हैं। इसका समाधान व्याकरण महाभाष्य के प्रथम आह्निक में दिया है-

न सर्वैर्लिङ्गैर्न च सर्वाभिर्विभक्तिभिर्वेदे मन्त्रा निगदिताः। ते चावश्यं यज्ञगतेन पुरुषेण यथायथं विपरिणमयितव्याः। तान् नावैयाकरणः शक्नोति यथायथं विपरिणमयितुम्

अर्थात् - 'वेद में मन्त्र सब लिङ्गों 'और सब विभक्तियों से युक्त नहीं पढ़े हैं। उन्हें यज्ञगत पुरुष के द्वारा यथावत् (तत्तत् यज्ञ के अनुरूप) विपरिणमित करना (बदलना) होगा। उनको अवैयाकरण नहीं बदल सकता। ऐसा करना मूल मन्त्र के संहितापाठ में परिवर्तन नहीं, अपितु विनियोग में सुविधानुसार परिवर्तन होगा।

(ग) सन्ध्या के मार्जन मन्त्रों में आये '**ओं भूः पुनातु शिरसि**' पर आपकी शंका है। हे प्रभु- आप प्राणों के भी प्राण हैं मेरे शिर को पवित्र कर दें। इस विषय में हम आपको बता दें कि सम्पूर्ण शरीर में सबसे अधिक प्राणवायु की आवश्यकता मस्तिष्क को होती है। इस तथ्य को आज का आधुनिक विज्ञान भी स्वीकार करता है। नासिका प्राणवायु लेने का मार्ग है, नासिका मार्ग से लिया गया प्राण सम्पूर्ण शरीर को संचालित करता है। मुख्य रूप से मस्तिष्क को। जब मस्तिष्क को पर्याप्त प्राणवायु नहीं मिलता तब मस्तिष्क काम करना कम कर देता है। उस समय हमें ऊँघ आने लगती है, तमोगुण की वृद्धि होने लगती है और हमें नींद आ जाती है। इसलिए प्राण का अधिक सम्बन्ध मस्तिष्क से होने के कारण 'भूः पुनातु शिरसि' कहा है।

दूसरा- सभी ज्ञान एवं कर्मेन्द्रियों का मूल उद्गम शिर (मस्तिष्क) में है। और इन्द्रियों को भी प्राण कह देते हैं। जैसा कि वैदिक साहित्य में कहा है- "**प्राणा इन्द्रियाणि**" (काठ.सं. ९.१/ताण्ड्य ब्रा. २२.४.३) इसी प्रमाण से महर्षि दयानन्द के सांख्यदर्शन से तथाकथित विरोधाभास का समन्वय भी हो जाता है। क्योंकि सांख्य दर्शन में सूक्ष्म शरीर के घटकों में ५ ज्ञानेन्द्रियाँ, ५ कर्मेन्द्रियाँ गिनाए हैं, जबकि महर्षि दयानन्द ने ५ प्राण, ५ ज्ञानेन्द्रियाँ कहा है। किन्तु प्राण को इन्द्रिय कहने पर यह तथाकथित विरोध समाप्त हो जाता है। पवित्रता के लिए यहाँ प्रार्थना है। यहाँ शिरः पर प्राणरूपी ज्ञान व कर्मेन्द्रियों के मूल उद्गम स्थान मस्तिष्क भाग को संकेतित करता है और '**सत्यं पुनातु पुनश्शिरसि**' वाला 'शिरः' पद मस्तिष्क स्थानीय मेधा=बुद्धि के लिए प्रयुक्त हुआ है।

(घ) इसी प्रकार '**स्वः पुनातु कण्ठे**' भी उचित ही है। आप इसको शिर से जोड़ कर देखना चाहते हैं और शिर की पवित्रता से सुख होगा यह भी देख रहे हैं। यह ठीक है किन्तु शिर की पवित्रता के लिए महर्षि ने पृथक् से '**सत्यं पुनातु पुनश्शिरसि**' मन्त्र लिखा है। जो तर्क आप 'स्वः' के साथ शिर को जोड़ कर दे रहे हैं, वही तर्क

thearyasamaj.org

'सत्यं' को जोड़ कर भी दिया जा सकता है। इसलिए महर्षि ने जो क्रम रखा है वही अधिक संगत है। 'सत्य' सत्यस्वरूप परमेश्वर हमारे शिर को पवित्र करें। अर्थात् हमारे विचारों में सत्यता हो और यही सत्यता ही पवित्रता है। जब हमारे विचारों में सत्यता=पवित्रता होगी तो हम अपने कण्ठ से सुखकारी वचन बोलेंगे, जिससे हमें व अन्यों को सुख मिलेगा। इसलिए ऋषिवर ने 'स्वः' को कण्ठ के साथ जोड़ा है और 'सत्य' को शिर के साथ, स्वयं एवं दूसरों को सुख व दुःख पहुँचाने में कण्ठ का विशेष महत्त्व है। विचारों की पवित्रता सत्य से है और कण्ठ की पवित्रता सुखकारक, मधुर वचनों से है।

इसलिए ये मन्त्र भले ही वेद के नहीं है ऋषि वचन हैं फिर भी इनको परिवर्तित करने का अधिकार हम अल्पबुद्धि वालों का नहीं है और जब ये युक्तिसंगत हैं ही तो बदलने की बात भी व्यर्थ है। अस्तु।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए

आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

अतिथि यज्ञ के होता

(१ से १५ जनवरी २०१५ तक)

१. श्रीमती चन्द्रकान्ता दत्त, पानीपत, हरि. २. श्रीमती तारावन्ती कोहली, दिल्ली ३. श्री एस.आर.-लता नारंग ४. श्री मृत्युञ्जय शर्मा, अजमेर ५. श्री देशबन्धु-रंजना दाधिच, अजमेर ६. श्री अमित कुमार त्यागी, मेरठ, उ.प्र. ७. श्री पंकज-मृदुला चौहान, मेरठ, उ.प्र. ८. श्री ओमप्रकाश दास लड्ढा, अजमेर ९. श्री अमरचन्द महेश्वरी, अजमेर १०. श्रीमती प्रीति शर्मा, केनडा ११. श्री संजय जिंदल, नई दिल्ली १२. श्री रोहित अग्रवाल, जालन्धर, पंजाब १३. श्री राजेश आर्य, दिल्ली १४. श्री विनोद कुमार आर्य, सरसा, हरि. १५. श्री वागिश गुप्ता, दिल्ली १६. श्रीमती अदिति गुप्ता, दिल्ली १७. श्री रजनीश कपूर, दिल्ली १८. श्री देवमुनि, अजमेर १९. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तक अतिथियों में निःशुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौओं को उत्तम चारा मिले इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चेक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएंगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(१६ से ३१ जनवरी २०१५ तक)

१. श्रीमती पुष्पा शर्मा, अजमेर २. श्रीमती शीला रानी, दिल्ली ३. श्रीमती शकुन्तला, मंजु, अजमेर ४. श्री जयनारायण, पाली, राज. ५. श्री सोहनलाल शारदा, शाहपुरा भीलवाड़ा, राज. ६. श्री गोकुलचन्द सुशीला भगत, जालन्धर, पंजाब ७. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

thearyasamaj.org

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ- प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***- आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***- अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***- गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***- वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***- इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***- योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

thearyasamaj.org

स्वामी विवेकानन्द का हिन्दुत्व

(स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती की दृष्टि में)

- नवीन मिश्र

स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती एक वैज्ञानिक संन्यासी थे। वे एक मात्र ऐसे स्वाधीनता सेनानी थे जो वैज्ञानिक के रूप में जेल गए थे। वे दार्शनिक पिता पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय के एक दार्शनिक पुत्र थे। आप एक अच्छे कवि, लेखक एवं उच्चकोटि के गवेषक थे। आपने ईशोपनिषद् एवं श्वेताश्वतर उपनिषदों का हिन्दी में सरल पद्यानुवाद किया तथा वेदों का अंग्रेजी में भाष्य किया। आपकी गणना उन उच्चकोटि के दार्शनिकों में की जाती है जो वैदिक दर्शन एवं दयानन्द दर्शन के अच्छे व्याख्याकार माने जाते हैं। परोपकारी के नवम्बर (द्वितीय) एवं दिसम्बर (प्रथम) २०१४ के सम्पादकीय ''आदर्श संन्यासी- स्वामी विवेकानन्द'' के देश में धर्मान्तरण, शुद्धि, घर वापसी की जो चर्चा आज हो रही है साथ ही इस सम्बन्ध में स्वामी सत्यप्रकाश जी के ३० वर्ष पूर्व के विचार आज भी प्रासंगिक हैं। इसी क्रम में स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती द्वारा लिखित पुस्तक ''अध्यात्म और आस्तिकता'' के पृष्ठ १३२ से उद्धृत स्वामी जी का लेख पाठकों के विचारार्थ प्रस्तुत है-

''विवेकानन्द का हिन्दुत्व ईसा और ईसाइयत का पोषक है।''

''महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अवतारवाद और पैगम्बरवाद दोनों का खण्डन किया। वैदिक आस्था के अनुसार हमारे बड़े से बड़े ऋषि भी मनुष्य हैं और मानवता के गौरव हैं, चाहे ये ऋषि गौतम, कपिल, कणाद हों या अग्नि, वायु, आदित्य या अंगिरा। मनुष्य का सीधा सम्बन्ध परमात्मा से है मनुष्य और परमात्मा के बीच कोई बिचौलिया नहीं हो सकता- न राम, न कृष्ण, न बुद्ध, न चैतन्य महाप्रभु, न रामकृष्ण परमहंस, न हजरत मुहम्मद, न महात्मा ईसा मूसा या न कोई अन्य। पैगम्बरवाद और अवतारवाद ने मानव जाति को विघटित करके सम्प्रदायवाद की नींव डाली।''

हमारे आधुनिक युग के चिन्तकों में स्वामी विवेकानन्द का स्थान ऊँचा है। उन्होंने अमेरिका जाकर भारत की मान मर्यादा की रक्षा में अच्छा योग दिया। वे रामकृष्ण परमहंस के अद्वितीय शिष्य थे। हमें यहाँ उनकी फिलॉसफी की आलोचना नहीं करनी है। सबकी अपनी-अपनी विचारधारा होती है। अमेरिका और यूरोप से लौटकर आये तो रूढ़िवादी हिन्दुओं ने उनकी आलोचना भी की थी। इधर कुछ दिनों से भारत में नयी लहर का जागरण हुआ-यह लहर महाराष्ट्र के प्रतिभाशाली व्यक्ति श्री हेडगेवार जी की कल्पना का परिणाम था। जो मुसलमान, ईसाई, पारसी नहीं हैं, उन भारतीयों का ''हिन्दू'' नाम पर संगठन। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना हुई। राष्ट्रीय जागरण की दृष्टि से गुरु गोलवलकर जी के समय में संघ का रूप निखरा और संघ गौरवान्वित हुआ, पर यह सांस्कृतिक संस्था धीरे-धीरे रूढ़िवादियों की पोषक बन गयी और राष्ट्रीय प्रवृत्तियों की विरोधी। यह राजनीतिक दल बन गयी, उदार सामाजिक दलों और राष्ट्रीय प्रवृत्तियों के विरोध में। देश के विभाजन की विपदा ने इस आन्दोलन को प्रश्रय दिया, जो स्वाभाविक था। हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य की पराकाष्ठा का परिचय १९४७ के आसपास हुआ। ऐसी परिस्थिति में गाँधीवादी काँग्रेस बदनाम हुई और साम्प्रदायिक प्रवृत्तियों को पोषण मिला। आर्य समाज ऐसा संघटन भी संयम खो बैठा और इसके अधिकांश सदस्य (जिसमें दिल्ली, हरियाणा, पंजाब के विशेष रूप से थे) स्वभावतः हिन्दूवादी आर्य समाजी बन गए। जनसंघ की स्थापना हुई जिसकी पृष्ठभूमि में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ था। फिर विश्व हिन्दू परिषद् बनी। पिछले दिनों का यह छोटा-सा इतिवृत्त है।

हिन्दूवादियों ने विवेकानन्द का नाम खोज निकाला और उन्हें अपनी गतिविधियों में ऊँचा स्थान दिया। पिछले १००० वर्ष से भारतीयों के बीच मुसलमानों का कार्य आरम्भ हुआ। सन् ९०० से लेकर १९०० के बीच दस करोड़ भारतीय मुसलमान बन गये अर्थात् प्रत्येक १०० वर्ष में एक करोड़ व्यक्ति मुसलमान बनते गये अर्थात् प्रतिवर्ष १ लाख भारतीय मुसलमान बन रहे थे। इस धर्म परिवर्तन का आभास न किसी हिन्दू राजा को हुआ, न हिन्दू नेता को। भारतीय जनता ने अपने समाज के संघटन की समस्या पर इस दृष्टि से कभी सूक्ष्मता से विचार नहीं किया था। पण्डितों, विद्वानों, मन्दिरों के पुजारियों के सामने यह समस्या राष्ट्रीय दृष्टि से प्रस्तुत ही नहीं हुई।

स्मरण रखिये कि पिछले १००० वर्ष के इतिहास में महर्षि दयानन्द अकेले ऐसे व्यक्ति हुए हैं, जिन्होंने इस समस्या पर विचार किया। उन्होंने दो समाधान बताए- भारतीय समाज सामाजिक कुरीतियों से आक्रान्त हो गया है- समाज का फिर से परिशोध आवश्यक है। भारतीय सम्प्रदायों के कतिपय कलङ्क हैं, जिन्हें दूर न किया गया तो यहाँ की जनता मुसलमान तो बनती ही रही है, आगे तेजी से ईसाई भी बनेगी। हमारे समाज के कतिपय कलङ्क

thearyasamaj.org

ये थे-

१. मूर्तिपूजा और अवतारवाद।

२. जन्मना जाति-पाँतवाद।

३. अस्पृश्यता या छूआछूतवाद।

४. परमस्वार्थी और भोगी महन्तों, पुजारियों, शंकराचार्यों की गद्दियों का जनता पर आतंक।

५. जन्मपत्रियों, फलित ज्योतिष, अन्धविश्वासों, तीर्थों और पाखण्डों का भोलीभाली ही नहीं शिक्षित जनता पर भी कुप्रभाव। राष्ट्र से इन कलङ्कों को दूर न किया जायेगा, तो विदशी सम्प्रदायों का आतंक इस देश पर रहेगा ही।

दूसरा समाधान महर्षि दयानन्द ने यह प्रस्तुत किया कि जो भारतीय जनता मुसलमान या ईसाई हो गयी है उसे शुद्ध करके वैदिक आर्य बनाओ। केवल इतना ही नहीं बल्कि मानवता की दृष्टि से अन्य देशों के ईसाई, मुसलमान, बौद्ध, जैनी सबसे कहो कि असत्य और अज्ञान का परित्याग करके विद्या और सत्य को अपनाओ और विश्व बन्धुत्व की संस्थापना करो।

विवेकानन्द के अनेक विचार उदात्त और प्रशस्त थे, पर वे अवतारवाद से अपने आपको मुक्त न कर पाये और न भारतीयों को मुसलमान, ईसाई बनने से रोक पाये। यह स्मरण रखिये कि यदि महर्षि दयानन्द और आर्य समाज न होता तो विषुवत रेखा के दक्षिण भाग के द्वीप समूह में कोई भी भारतीय ईसाई होने से बचा न रहता। विवेकानन्द के सामने भारतीयों का ईसाई हो जाना कोई समस्या न थी।

आज देश के अनेक अंचलों में विवेकानन्द के प्रिय देश अमेरिका के षड़यन्त्र से भारतीयों को तेजी से ईसाई बनाया जा रहा है। स्मरण रखिये कि विवेकानन्द के विचार भारतीयों को ईसाई होने से रोक नहीं सकते, प्रत्युत मैं तो यही कहूँगा कि यदि विवेकानन्द की विचारधारा रही तो भारतीयों का ईसाई हो जाना बुरा नहीं माना जायेगा, श्रेयस्कर ही होगा। विवेकानन्द के निम्न शब्दों पर विचार करें- (दशम् खण्ड, पृ. ४०-४१)

मनुष्य और ईसा में अन्तर:- अभिव्यक्त प्राणियों में बहुत अन्तर होता है। अभिव्यक्त प्राणि के रूप में तुम ईसा कभी नहीं हो सकते। ब्रह्म, ईश्वर और मनुष्य दोनों का उपादान है। ...... ईश्वर अनन्त स्वामी है और हम शाश्वत सेवक हैं, स्वामी विवेकानन्द के विचार से ईसा ईश्वर है और हम और आप साधारण व्यक्ति हैं। हम सेवक और वह स्वामी है।

इसके आगे स्वामी विवेकानन्द इस विषय को और स्पष्ट करते हैं, ''यह मेरी अपनी कल्पना है कि वही बुद्ध ईसा हुए। बुद्ध ने भविष्यवाणी की थी, मैं पाँच सौ वर्षों में पुन: आऊँगा और पाँच सौ वर्ष बाद ईसा आये। समस्त मानव प्रकृति की यह दो ज्योतियाँ हैं। दो मनुष्य हुए हैं बुद्ध और ईसा। यह दो विराट थे। महान् दिग्गज व्यक्तित्त्व दो ईश्वर समस्त संसार को आपस में बाँटे हुए हैं। संसार में जहाँ कही भी किञ्चित ज्ञान है, लोग या तो बुद्ध अथवा ईसा के सामने सिर झुकाते हैं। उनके सदृश और अधिक व्यक्तियों का उत्पन्न होना कठिन है, पर मुझे आशा है कि वे आयेंगे। पाँच सौ वर्ष बाद मुहम्मद आये, पाँच सौ वर्ष बाद प्रोटेस्टेण्ट लहर लेकर लूथर आये और अब पाँच सौ वर्ष फिर हो गए हैं। कुछ हजार वर्षों में ईसा और बुद्ध जैसे व्यक्तियों का जन्म लेना एक बड़ी बात है। क्या ऐसे दो पर्याप्त नहीं हैं? ईसा और बुद्ध ईश्वर थे, दूसरे सब पैगम्बर थे।''

कहा जाता है कि शंकराचार्य ने बौद्ध धर्म को भारत से बाहर निकाल दिया और आस्तिक धर्म की पुन: स्थापना की। महात्मा बुद्ध (अर्थात् वह बुद्ध जो ईश्वर था) को भी मानिये और उनके धर्म को देश से बाहर निकाल देने वाले शंकराचार्य को भी मानिये, यह कैसे हो सकता है? विश्व हिन्दू परिषद् वाले स्वामी शंकराचार्य का भारत में गुणगान इसलिए करते हैं कि उन्होंने भारत को बुद्ध के प्रभाव से बचाया, वरना ये ही विश्व हिन्दू परिषद् वाले सनातन धर्म स्वयं सेवक संघ की स्थापना करके बुद्ध की मूर्तियों के सामने नत मस्तक होते। यह हिन्दुत्व की विडम्बना है। यदि स्वामी विवेकानन्द की दृष्टि में बुद्ध और ईसा दोनों ईश्वर हैं तो भारत में ईसाई धर्म के प्रवेश में आप क्यों आपत्ति करते हैं। पूर्वोत्तर भारत में ईसाइयों का जो प्रवेश हो रहा है, उसका आप स्वागत कीजिये। यदि विवेकानन्द को तुमने ''हिन्दुत्व'' का प्रचारक माना है तो तुम्हें धर्म परिवर्तन करके किसी का ईसाई बनना किसी को ईसाई बनाना क्यों बुरा लगता है?

मैं स्पष्ट कहना चाहता हूँ कि विवेकानन्दी हिन्दू (जिन्हें बुद्ध और ईसा दोनों को ईश्वर मानना चाहिए) देश को ईसाई होने से नहीं बचा सकते। भारतवासी ईसाई हो जाएँ, बौद्ध हो जायें या मुसलमान हो जाएँ तो उन्हें आपत्ति क्यों? ईसा और बुद्ध साक्षात् ईश्वर और हजरत मुहम्मद भी पैगम्बर!

महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज की स्थिति स्पष्ट है। हजरत मुहम्मद भी मनुष्य थे, ईसा भी मनुष्य थे, राम और कृष्ण भी मनुष्य थे। परमात्मा न अवतार लेता है न वह ऐसा पैगम्बर भेजता है, जिसका नाम ईश्वर के साथ जोड़ा जाए और जिस पर ईमान लाये बिना स्वर्ग प्राप्त न हो।

भारत को ईसाइयों से भी बचाइये और मुसलमानों से भी बचाइये जब तक कि यह ईसा को मसीहा और मुहम्मद साहब को चमत्कार दिखाने वाला पैगम्बर मानते हैं।

- आर्यसमाज, अजमेर

thearyasamaj.org

स्तुता मया वरदा वेदमाता-४

अविद्वेषाम्- शब्द का महत्त्व है हमारे मन के अन्दर जो दोष आते हैं उन्हें दूर करना। दोषों को दूर किये बिना शुद्ध भाव मन में स्थान नहीं पा सकते। जिस प्रकार स्थान की शुद्धता के बिना सजाने या व्यवस्थित करने का कार्य नहीं हो सकता। स्वच्छता के बाद सौन्दर्य का उपक्रम किया जाता है उसी प्रकार इस मन्त्र में सौन्दर्य को बढ़ाने वाले दो शब्द हैं। एक है **सहृदयम्** और दूसरा है **सामनस्यम्**। लगता है दोनों का अर्थ एक जैसा है फिर दो शब्दों की क्या आवश्यकता है? महर्षि दयानन्द सहृदयम् का अर्थ करते हुए लिखते हैं माता-पिता सन्तान स्त्री-पुरुष, भृत्यु, मित्र, पड़ौसी अन्य सबसे अपने समान सुख की कामना और दु:ख से दूर रहने की इच्छा करना है। महर्षि जी ने सामनस्यम् का अर्थ मन की प्रसन्नता किया है।

हृदय शब्द संस्कृत साहित्य में दोनों अर्थों में आता है एक अर्थ हृदय जो शरीर में रक्त के प्रसार का काम करता है। इसीलिए हृदय शब्द का निर्वचन करते हुए कहा गया है **हरति ददति याति इति हृदयम्।** अर्थात् जो लेता है देता है और चलता है उसे हृदय कहते हैं। परन्तु यहाँ हृदय शरीर का अवयव नहीं है, यहाँ सुख-दु:ख का अनुभव करने वाले को हृदय कहा है। इसको समझने के लिए भाषा में प्रचलित प्रयोगों पर ध्यान देंगे तो यह बात सरलता से समझ में आ जाती है। हृदय से बना हुआ एक शब्द है सहृदय, जिसका अर्थ है हमारी भावनाओं को समझने वाला। इसी हृदय शब्द से एक शब्द बना है, सहृदय शब्दार्थ की दृष्टि से इसका अर्थ अच्छा हृदय जिसका है वह। किन्तु यह शब्द मित्र के अर्थ में रूढ़ है, इसलिये जिसके प्रति अच्छा भाव होता है उसे सहृदय कहते हैं। इसी से बना दूसरा शब्द है सौहार्द जो निकटता को बताने के लिए काम आता है। इसी का अर्थ सहृदय के अन्दर होने वाला भाव विचार सौहार्द कहलाता है। साहित्य में, काव्य में इसका प्रयोग किया गया है। सहृदय जो काव्य या नाटक पढ़ते देखते समय शब्दों के अर्थों का अनुभव कर सकता है। जब दो व्यक्तियों के बीच यह भाव होता है तो सहृदय कहलाते हैं। सहृदय व्यक्ति अपने सुख-दु:ख के समान दूसरे के सुख-दु:ख का अनुभव करता है। हम किसी के लिए तभी कुछ करते हैं जब हम अपनी अनुभूति को दूसरे में और दूसरे की अनुभूति को अपने में अनुभव करते हैं। इस अनुभूति के बिना कोई भी किसी के लिए कुछ भी नहीं कर सकता। हम सैंकड़ों लोगों को प्रतिदिन दु:खी-सुखी देखते हैं परन्तु उनके लिए हमारे मन में विशेष भाव नहीं आता किन्तु दु:खी व्यक्ति के रूप में अपना बेटा, भाई, पत्नी, मित्र आदि हो तो हमारे विचार बदल जाते हैं, अपने बच्चे के दु:ख को देखकर हमें भी रोना आ जाता है। उसके चेहरे पर हंसी देखकर हमारे चेहरे पर भी मुस्कुराहट आ जाती है। यह भाव जब मैं नाटक, सिनेमा देखता हूँ, कोई नाटक, उपन्यास, कहानी पढ़ता हूँ तब भी मेरे मन में इसी प्रकार आते हैं। चलचित्र देखते हुए नायक को दु:खी देखकर अश्रुधारा बहने लगती है और नायक के साथ लड़ते हुए खलनायक को देखकर उसपर क्रोध आता है। ये आंसू और गुस्सा हमारे सहृदय होने की स्थिति है। एक बार महाकवि निराला को एक समारोह में कीमती शॉल भेंट किया गया, वे प्रात:काल उस शॉल को ओढ़कर भ्रमण के लिए निकले, मार्ग में एक भिखारी को सर्दी में ठिठुरते हुए देखा तो बिना कुछ सोचे शॉल उसे ओढ़ा दिया। हम ऐसा नहीं करते, हम भी देखते हैं कि कोई व्यक्ति शीत से व्याकुल है परन्तु हमें दु:ख नहीं होता जबतक उसका दु:ख मेरा दु:ख नहीं बन जाता तबतक मैं उसके दु:ख निवारण का यत्न नहीं करता, इसलिए मनुष्य का सहृदय हुये बिना उससे प्रेम करना सम्भव नहीं है।

एक और बात यहाँ समझने की है सहृदयता हमारे मन में तभी आती है जब हमारे अन्दर सात्विक भाव होते हैं। प्रत्येक मनुष्य में हर समय सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण रहते हैं, सतोगुण के बिना मनुष्य सहृदय नहीं हो सकता इसलिये सहृदयम् बनने के लिये कहा है।

यह संसार जिन पदार्थों से बना है, उसके तीन ही कारण हैं, सत्व, रज और तम। इन्हीं से सभी प्रकार के प्राकृतिक पदार्थों का निर्माण हुआ है। इसको शास्त्र ने **सत्त्वरजस्तमसां साम्यावस्था प्रकृतिः** अर्थात् सत्व, रज, तम इन तीन पदार्थों की साम्य अवस्था को प्रकृति कहते हैं। संसार इन्हीं की विकृति है। हम इसे विकास भी कह सकते हैं। संसार के सभी पदार्थ इन तीन गुणों का रूपान्तर है। संसार के पदार्थों से शरीर बना है। इसलिये वह संसार के पदार्थों से घटता-बढ़ता है, जब संसार के पदार्थों का प्रभाव शरीर पर पड़ता है, तब मन भी भौतिक है अत: वह भी इन तत्त्वों से ही बना है, इस कारण उसमें जो परिवर्तन होता है वह भी इन तत्त्वों के घटने-बढ़ने से होता है। सहृदयम् भाव सतोगुण के प्रकाश को व्यक्त करता है। इसके उदय होने से ही मनुष्य दया, धर्म, आस्तिकता, परोपकार के भावों से युक्त होता है, जिसे वेद ने **सहृदयम्** कहकर समझाया है।

क्रमश: ....

hearyasamaj.org

संस्था - समाचार

१६ से ३१ जनवरी २०१५

(१) यज्ञ एवं प्रवचन- परमपिता परमेश्वर की कृपा से, सभा कार्यकर्त्ताओं के पुरुषार्थ से व आप सभी के सहयोग से सभा की सभी गतिविधियाँ यथा- प्रातः सायं यज्ञ, प्रवचन, गुरुकुल, अतिथियों, आश्रमवासियों के लिए भोजन, गौशाला, चिकित्सालय, परोपकारी पत्रिका व अन्य ग्रन्थों का प्रकाशन, जनसम्पर्क व प्रचार कार्यक्रम पिछले दिनों भी यथावत चलती रही।

प्रात:कालीन प्रवचन के क्रम में **डॉ. धर्मवीर जी** ने श्रद्धा सूक्त (ऋ. १०/१५१) की व्याख्या प्रस्तुत की। प्रथम मन्त्र की व्याख्या करते हुए आपने बताया कि मन्त्र के प्रथम पाद- **श्रद्धयाग्निः समिध्यते** का शब्दिक अर्थ है- श्रद्धा के द्वारा अग्नि प्रदीप्त होता है तो यहाँ श्रद्धा से क्या अभिप्राय है? अग्नि से क्या अर्थ लिया जाए? और प्रदीप्त होने की क्या-क्या व्याख्या हो सकती है? यह हमें विचारना चाहिए। हमारे शास्त्रों में श्रद्धा की व्याख्या के प्रसंग में कहीं सत्य को यजमान कहा गया और श्रद्धा को उसकी पत्नी कहा गया, कहीं श्रद्धा को सूर्य की दुहिता बताया गया और योगदर्शन में श्रद्धा को योगी की माता कहा गया। यजुर्वेद कहता है-

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।।

- यजु. १९/३०

अर्थात् व्रत से दीक्षा की प्राप्ति होती है, दीक्षा से दक्षिणा, दक्षिणा से श्रद्धा और श्रद्धा से सत्य की प्राप्ति होती है। यहाँ व्रत से क्या अभिप्राय है? जिस बात का वरण किया जाता है, जिसे स्वीकारा जाता है उसे व्रत कहा जाता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने व्रत का अर्थ किया है- सत्यनियम पालन में प्रीति। कई बार व्यक्ति को बलात भी अच्छे विषयों/नियमों में चलाया जाता है, लेकिन यह स्थिति उसके लिए कष्टकर होती है। जैसे प्रातः ४ बजे उठने के लाभ न जानने वालों को जब किसी व्यवस्था में बलात ४ बजे उठाया जाता है तो उसकी पीड़ा/कष्ट का हम अनुमान कर सकते हैं। लेकिन जब यही व्यक्ति प्रातः ४ बजे उठने के लाभ को जानकर उसे अपना व्रत बना लेता है तो वह खुशी-खुशी प्रातः ४ बजे उठ जाता है। स्थिति यहाँ तक पहुँच जाती है कि व्यक्ति को प्रातः ४ बजे के बाद सोना कष्टकर लगने लगता है। तो मन्त्र कहता है कि व्रत से दीक्षा की प्राप्ति होती है। दीक्षा कहते हैं अधिकार को। जब किसी विद्यार्थी ने पढ़ने का निश्चय (व्रत) किया और वह किसी गुरुकुल में पहुँचा, गुरुकुल में उसे प्रवेश की अनुमति दे दी गई, पढ़ने का अधिकार दे दिया गया, तो यह उसकी दीक्षा है। देखिए आज भी महाविद्यालयों आदि में शिक्षा पूरी होने पर दीक्षान्त समारोह आयोजित किया जाता है। दीक्षा से दक्षिणा प्राप्त होती है। दान, दक्षिणा, मजदूरी, वेतन, ऋण ये सारे शब्द देने-लेने से सम्बन्ध रखते हैं। दान में दाता की इच्छा प्रमुख होती है, लेकिन देने के बाद व्यक्ति का अधिकार समाप्त हो जाता है। देने के बाद व्यक्ति इसे वापस लेना चाहे तो वह इसका अधिकारी नहीं होता है। इस प्रसंग में आपने एक दृष्टान्त सुनाया। लगभग १५ वर्ष पूर्व जब आपने गुरुकुल प्रारम्भ किया था तो आपके एक सहयोगी महानुभाव ने आपको १००० रु. का दान दिया। किसी कारण वह गुरुकुल ३ माह ही चल पाया। तो ये महानुभाव अपना दान वापस माँगने लगे। तो आपने कहा कि आपने दान किया है, आप ये तो कह सकते हैं कि तुमने इसका ठीक प्रयोग नहीं किया आदि, लेकिन दान वापस माँगने का अधिकार तो किसी भी दाता को नहीं होता। वे बोले-क्यों नहीं है, मैं तो मेरे पैसे वापस लेकर रहूँगा, भले ही इसके लिए तुम्हारे प्रधान, मन्त्री, कोषाध्यक्ष किसी से भी बात करनी पड़े। इस तरह ७-८ माह तक वे आप से पैसे वापस माँगते रहे। पुनः ऋषि मेले के अवसर पर प्रधान जी पुनः दान माँगने पहुँच गए। तो उन्होंने कहा- अरे पैसे तो मुझे तुमसे लेने है। प्रधान जी के पुनः दान माँगने पर उन्होंने कहा-मैं तो दूँगा नहीं और ऐसा कहकर अपना दरवाजा बन्द कर लिया। प्रधान जी वहाँ ही बैठ गए। पुनः आधे घण्टे बाद दरवाजा खोलकर दान दिया और पिछले लेने की बात भूल गए। तो दान देकर वापस नहीं लिया जाता। किसी कार्य को करवाने पर दक्षिणा दी जाती है और वेतन और मजदूरी भी दी जाती है, तो वेतन और दक्षिणा में क्या अन्तर है? तो इनमें जो मुख्य अन्तर है वह यह कि वेतन निश्चित होता है जबकि दक्षिणा समय, कार्य और योग्यता के आधार पर दी जोती है। जहाँ वेतन प्रायः निश्चित होता है वहीं दक्षिणा, नमस्ते से लेकर राज्य

thearyasamaj.org

प्रदान करने तक हो सकती है।

आचार्य सोमदेव जी ने अपने प्रवचन क्रम में विद्यार्थियों से प्रश्न किया कि आप अपने जीवन में क्या बनना चाहते हैं- एक चपरासी या एक अफसर? विद्यार्थियों का अफसर बनने की इच्छा प्रकट करना स्वाभाविक था। आपने बताया कि एक चपरासी और एक अफसर में जो अन्तर होता है वह उसकी समझ/बुद्धि का होता है। जिसकी समझ ठीक होती है वह अपने जीवन का सदुपयोग कर पाता है। एक घटना सुनाते हुए आपने बताया कि एक बार किसी राजा का सबसे प्रिय घोड़ा चोरी हो गया। चूँकि घोड़ा राजा का प्रिय था अत: राजा ने अनेकों सैनिक उसकी खोज में भेजे। घूमते-घूमते सैनिक एक गाँव में पहुँचे जहाँ तीन बच्चों ने इसे पकड़ रखा था। सैनिक घोड़ा ले आए और राजा के सम्मुख उन बच्चों की प्रशंसा की। राजा ने इन बच्चों को सम्मानित करने की सोची। उसने इन बच्चों को राजदरबार बुलाया और प्रत्येक बच्चे को एक घण्टा राजा बनने का मौका दिया। बच्चों को जब राजा बनाया गया तो पहले बच्चे को मिठाई प्रिय थी, उसने राजा बनते ही आदेश दिया कि मुझे मिठाई की दुकान में ले जाया जाए। उस बाल-राजा को राज्य की सबसे बड़ी मिठाई की दुकान में ले जाया गया। जिस बच्चे ने प्राय: मिठाई न खाई हो सैकड़ों मिठाईयों को एकाएक पाकर वह देखता ही रह गया, चख भी नहीं पाया और उसके हिस्से का एक घण्टा पूरा हो गया। इस प्रकार जब दूसरे बच्चे को समय दिया गया तो उसे कपड़ों का मोह था, उसने अपना एक घण्टा कपड़ों को देखते-देखते बीता दिया। तीसरा बालक बुद्धिमान् था उसने राजा बनते ही कोषाध्यक्ष से पूछा- हमारे खजाने में कितना धन है? कोषाध्यक्ष ने बताया। चूँकि बालक निर्धनता में पला था, गरीबी जानता था, तो उसने आदेश दिया कि हमारे कोश का इतना प्रतिशत भाग गरीबों के कल्याणार्थ ही खर्च किया जाए। इस बच्चे ने राजा से कहा कि अब मेरा काम हो गया आप पुन: राजा बन जाए। राजा बोला- बच्चे मैंने तुम्हें एक घण्टे के लिए राजा बनाया था, लेकिन अभी तो तुम्हारे तीन मिनट ही बीते हैं, तुम्हारे पास ५७ मिनट और है। बच्चे ने कहा- मेरा काम इतने में ही हो गया और समय की मुझे आवश्यकता नहीं। तो इस प्रकार आचार्य जी ने अपने दृष्टान्त के माध्यम से बच्चों को बताया कि जो विद्यार्थी, इस तीसरे बच्चे की तरह अपनी बुद्धि का ठीक प्रयोग करता है, वह समय से पहले ही अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है। और धार्मिक व्यक्ति ही अपनी बुद्धि का ठीक प्रयोग कर सकता है। इसलिए हमारे यहाँ धर्म की महत्ता है। लेकिन आजकल हमारे यहाँ धर्म के नाम पर बहुत सारे अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियाँ चल पड़ी हैं। हमें इनसे बचना चाहिए। धर्म के सही स्वरूप को समझने के लिए हमें सत्यार्थप्रकाश जैसे ग्रन्थ को पढ़ना चाहिए।

सायंकालीन प्रवचनों के क्रम में मेरठ से पधारे **श्री सत्येन्द्र सिंह जी आर्य** ने सत्यार्थप्रकाश के तीसरे समुल्लास के आधार पर चर्चा की। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने विद्या को अनिवार्य माना है। वे कहते हैं कि सन्तानों का उत्तम विद्या, शिक्षा, गुण, कर्म और स्वभाव रूप आभूषणों का धारण करना, माता, पिता, आचार्य और सम्बन्धियों का मुख्य कर्म है।....पाँचवें अथवा आठवें वर्ष से आगे (माता-पिता) अपने लड़के-लड़कियों को घर में न रख के पाठशाला में अवश्य भेज देवें। जो न भेजे वह दण्डनीय हो। इसमें राजनियम और जाति नियम होना चाहिए। विद्या के महत्त्व पर बल देते हुए महर्षि जी ने एक श्लोक दिया है-

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

अर्थात् जिन पुरुषों का मन विद्या के विलास में मग्न रहता है, सुन्दर, शील स्वभावयुक्त, सत्यभाषण आदि नियम पालन युक्त और जो अभिमान, अपवित्रता से रहित, अन्य की मलिनता के नाशक, सत्योपदेश और विद्या दान से संसारी जनों के दु:खों को दूर करने वाले, वेद विहित कर्मों से पराये उपकार करने में लगे रहते हैं, वे नर और नारी धन्य हैं। बस इस प्रकार के रत्न उत्पन्न करना विद्या का उद्देश्य है।

बाह्य आवरण, आभूषण रत्नादि से मनुष्य शोभित नहीं होता अपितु ज्ञान दीप्ति उसे ज्योतित करती है। ज्ञान की प्राप्ति का प्रयत्न ही अध्ययन और प्राप्ति के लिये मार्ग-दर्शन ही अध्यापन है। सदाचार युक्त जीवन वाले पुरुष और स्त्रियाँ ही शिक्षक हों, जो अध्यापक पुरुष या स्त्री दुष्टाचारी हों, उनसे शिक्षा न दिलावें। किन्तु जो पूर्ण विद्यायुक्त, धार्मिक हों, वे ही पढ़ाने और शिक्षा देने के योग्य हैं। ऋषिवर तो सदाचार को धर्म का पर्याय मानते थे। श्री आर्य

thearyasamaj.org

ने यह भी स्पष्ट किया कि विद्या से विनम्रता आती है। एक श्लोक भी हमें इस विषय में सावधान करता है-

विद्या विवादाय धनं मदाय शक्तिः परेषां परपीडनाय।
खलस्य साधोर्विपरीतमेतत् ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय।।

विद्या का उद्देश्य ज्ञान-प्राप्ति है, विवाद करना नहीं है, जैसे कि धन का उद्देश्य दान देना है न कि अहंकार करना और शक्ति भी दूसरों को पीड़ित करने के लिए नहीं, बल्कि दूसरों के रक्षा करने के लिए है।

ऋषिवर सहशिक्षा के विरोधी थे और कोलाहल पूर्ण नगरीय जीवन और क्रिया-कलापों को वे विद्या-प्राप्ति में बाधक मानते थे। इसीलिए उनका स्पष्ट निर्देश है कि विद्या पढ़ने का स्थान एकान्त देश में होना चाहिए, लड़के और लड़कियों की पाठशाला दो कोश एक-दूसरे से दूर होनी चाहिएँ। जो वहाँ अध्यापिका और अध्यापक पुरुष वा नौकर-चाकर हों, वे कन्याओं की पाठशाला में सब स्त्री और पुरुषों की पाठशाला में पुरुष रहें। स्त्रियों की पाठशाला में ५ वर्ष का लड़का और लड़कों की पाठशाला में ५ वर्ष की लड़की भी न जाने पावे अर्थात् जब तक वे ब्रह्मचारी वा ब्रह्मचारिणी रहें, तब तक स्त्री वा पुरुष का दर्शन, स्पर्शन, एकान्त सेवन, भाषण, विषय कथा, परस्पर क्रीड़ा, विषय का ध्यान और सङ्ग आदि से पूर्णत: अलग रहें। अध्यापक लोग विद्यार्थियों को इन बातों से बचावें, जिससे वे उत्तम विद्या, शिक्षा, शील स्वभाव, शरीर और आत्मा के बल से युक्त होकर आनन्द को नित्य बढ़ा सकें।

विद्या-अध्ययन काल में विद्यार्थियों का रहन-सहन, वेश-भूषा समान हों, खान-पान, आसन सबको एक समान दिये जाएँ, चाहे वह राजकुमार अथवा राजकुमारी हो या दरिद्र की सन्तान हो। भेद-भाव से बच्चों में कुण्ठा आती है और उनका विकास प्रभावित होता है।

गुरुकुलीय शिक्षा-प्रणाली में ऋषिवर ने आर्ष पाठ विधि पर बल दिया है जिससे वेदोक्त ज्ञान प्राप्त हो सके। गुरुकुलीय जीवन का आरम्भ गायत्री मन्त्र (गुरुमन्त्र) से निर्देशित किया है। स्नान आदि से शरीर की बाह्य शुद्धि और प्राणायाम के द्वारा आन्तरिक शुद्धि (सत्याचरण से मन, विद्या और तप से अर्थात् सब प्रकार के कष्ट भी सह के, धर्म ही के अनुष्ठान करने) से जीवात्मा ज्ञान का अर्थात् पृथिवी से लेके परमेश्वर पर्यन्त पदार्थों के विवेक से बुद्धि, अर्थात् दृढ़ निश्चय पवित्र होता है। विद्या-प्राप्ति की यही तर्क-संगत एवं वैज्ञानिक विधि है। अपने प्रवचनों में श्री आर्य जी ने वैदिक दर्शन की यह बात स्पष्ट रूप से स्थापित की कि मानव जीवन की सार्थकता और सफलता विद्या प्राप्ति से ही सम्भव है और विद्या अध्ययन के लिए तपश्चर्या पूर्ण सदाचार युक्त जीवन आवश्यक है।

२. अध्ययन-अध्यापन (क) निरुक्त-अध्ययन- २१ जनवरी २०१५ को आर्यजगत् के विद्वान् आचार्य सनत्कुमार जी के अध्यापकत्व में १७ विद्यार्थियों ने निरुक्त का अध्ययन पूरा किया। इनमें १४ विद्यार्थी आचार्य जी के अध्यापकत्व में महाभाष्य तक व्याकरण का अध्ययन पूरा कर चुके थे। अध्ययनार्थियों में- आचार्य सत्यव्रत, स्वामी ध्रुवदेव, श्रीमान् श्रीधर, ब्र. विक्रम, श्रीमान् जयदेव, ब्र. चन्द्रगुप्त, ब्र. गौतम, ब्र. वेदभूषण, ब्र. बलदेव, ब्र. रुद्रदत्त, ब्र. रामदयाल, ब्र. ज्ञानचन्द्र, ब्र. अभिषेक, ब्र. रामकिशोर आदि सम्मिलित थे। इसके अतिरिक्त आश्रमवासी साधकों में वानप्रस्थी देवमुनि, उपाध्याय भैरूलाल, माता ज्योत्स्ना आदि भी कक्षा का लाभ उठाते रहे।

(ख) वैशेषिक अध्ययन- स्वामी विष्वङ् जी के आचार्यत्व में ४ ब्रह्मचारियों व ४ अन्य आश्रमवासी साधकगणों ने वैशेषिक दर्शन का अध्ययन पूरा किया। अध्येताओं में ब्र. वेदनिष्ठ, ब्र. कश्यप, ब्र. रामदयाल, ब्र. रविशंकर एवं आश्रमवासी साधक गणों में श्री प्रभुलाल, श्री राजेश, माता दीपा, बहन सुकामा थे।

(ग) उपनिषद्-अध्ययन- स्वामी विष्वङ् जी के निर्देशन में २६ जनवरी २०१५ से एकादशोपनिषद् का अध्यापन प्रारम्भ हो गया। इसमें गुरुकुल से ब्र. वेदनिष्ठ, ब्र. कश्यप, ब्र. रामदयाल, ब्र. रविशंकर, ब्र. उपेन्द्र एवं आश्रमवासी साधक गणों में श्री प्रभुलाल, डॉ. किशोर काबरा, श्री आशुतोष, श्री राजेश, माता दीपा, माता कमला, माता मेहता, बहन सुकामा, बहन रुचि आदि प्रमुख हैं। इति।।

इस प्रत्यक्ष चराचर जगत् के चौंतीस (३४) तत्त्व कारण हैं उनके गुण और दोषों को जो जानते हैं उन्हीं को सुख मिलता है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६१

मनुष्यों को चाहिये कि सदा यज्ञ का आरम्भ और समाप्ति को करें और संसार के जीव को अत्यन्त सुख पहुँचावें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६२

thearyasamaj.org

आर्यजगत् के समाचार

१. बलिदान समारोह सम्पन्न- दि. २५ दिसम्बर २०१४ को वैदिक संस्कृति की रक्षार्थ प्राणों की आहुति देने वाली स्वामी श्रद्धानन्द का ८८वाँ बलिदान दिवस समारोह समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य शिक्षण संस्थानों के सहयोग से आर्यसमाज अरावली विहार (काला कुआँ), अलवर, राज. में अति उत्साह व श्रद्धापूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आर्यसमाज की प्रान्तीय स्तर पर निष्ठापूर्वक एवं समर्पित भावों से सेवा करने के लिये पं. अमरमुनि जी का अभिनन्दन किया गया। मुनि जी ने अलवर की समस्त आर्यसमाजों की संयुक्त आर्यसमाज प्रचार समिति बनाकर पाँच मास के अन्तिम रविवार को सार्वजनिक स्थान पर यज्ञ व वेद प्रचार का कार्यक्रम चलाकर सैकड़ों लोगों में आर्यसमाज के सिद्धान्तों में आस्था पैदा कराई।

२. यज्ञ प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न- हरियाणा राज्य के पुण्डरी नगर (कैथल) के विशाल पण्डाल में १४६ सपत्निक यजमानों व अन्य यजमानों तथा सैकड़ों श्रोतागण की उपस्थिति में आचार्य ज्ञानेश्वर जी (वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़, गुज.) के निर्देशन व ब्रह्मत्त्व में, स्वामी बलेश्वरानन्द जी, स्वामी ब्रह्मनन्द आश्रम बणी, पुण्डरी, के सहयोग व आशीर्वाद से सर्वकल्याण धर्मार्थ न्यास (पंजी.) पानीपत के तत्त्वावधान में परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से निर्विघ्न सम्पन्न हुआ। इस आयोजन को सफल करने में शिविर की धुरी सभी व्यवस्थाओं को सम्भाल रहे शिविर के संयोजक राजपाल बहादुर तथा भारत विकास परिषद् फतेहपुर पुण्डरी, आर्यसमाज पुण्डरी व अनेक महिलाओं एवं पुरुषों का भरपूर सहयोग रहा। श्री नन्दकिशोर शास्त्री के निर्देशन में गुरुकुल कुरुक्षेत्र के १८ ब्रह्मचारियों द्वारा उत्तम प्रकार से यज्ञ व्यवस्था की गई। अन्त में शिविर के समापन अवसर पर महात्मा वेदपाल आर्य-अध्यक्ष सर्वकल्याण धर्मार्थ न्यास (पंजी.) पानीपत ने तथा शिविर संयोजक श्री राजपाल बहादुर जी-प्रवक्ता स्वामी ब्रह्मानन्द आश्रम, बणी पुण्डरी ने परमपिता परमात्मा का विशेष धन्यवाद किया।

३. बलिदान दिवस मनाया- केन्द्रीय आर्य सभा यमुनानगर के तत्त्वावधान में आर्यसमाज मॉडल कॉलोनी, यमुनानगर, हरियाणा में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस दि. २१ दिसम्बर को मनाया गया। प्रात: यज्ञ से कार्यक्रम आरम्भ हुआ, जिसमें आर्यसमाज के महान् विद्वान् डॉ. वेदप्रकाश विद्यालंकार (प्रो. डी.ए.वी. कॉलेज अम्बाला शहर, लाहौर) आचार्य डॉ. राजकिशोर (गुरुकुल शादीपुर) यमुनानगर व डॉ. कमला वर्मा ने स्वामी जी के जीवन पर अपने-अपने विचार रखें। रुड़की हरिद्वार से पधारे भजनोपदेशक श्री कल्याणसिंह वेदी ने स्वामी जी के जीवन पर मधुर भजनों के माध्यम से लोगों को मोहित कर दिया।

४. श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न- आर्यसमाज मन्दिर मॉडल टाऊन, जालन्धर में विशेष सत्संग का आयोजन किया गया। २३ दिसम्बर को आर्यसमाज के वीर संन्यासी अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस मनाया गया। जिसमें पं. सत्यप्रकाश शास्त्री ने स्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डाला एवं पं. बुद्धदेव वेदालंकार ने भजन सुनाये। दि. २८ दिसम्बर २०१४ को विशेष मासिक सत्संग के अन्तर्गत प्रात: युवाओं के उत्थान व कल्याण के लिए युवा सत्संग का आयोजन किया जिसमें १०० से अधिक युवाओं ने उपस्थित होकर सफल जीवन के निर्माण के सूत्रों को जाना।

५. प्रवेश सूचना- स्वामी ऋतमानन्द गुरुकुल विज्ञान आश्रम, पाली, मारवाड़, राज. में अप्रैल से जून २०१५ तक प्रवेश होंगे। प्रवेश छठी कक्षा से होते हैं। विद्यार्थी कुशाग्र बुद्धि व शारीरिक रूप से स्वस्थ होने चाहिए। पूज्यपाद स्वामी विवेकानन्द सरस्वती की संरक्षण और देखरेख से संचालित यह गुरुकुल महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के आदर्शों को पूरा करने का प्रयास कर रहा है। इच्छुक विद्यार्थी सम्पर्क करें ०९९५०१६९३८८, ०९९५०८७५२९२

६. आवश्यकता- महात्मा गाँधी मार्ग स्थित आर्यसमाज अकोला द्वारा संचालित डी.ए.वी. अंग्रेजी स्कूल में नर्सरी से कक्षा १०वीं तक की शिक्षा की व्यवस्था है। अभी स्कूल में लगभग ९०० विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। इस विद्यालय में विविध कार्यक्रमों के साथ-साथ वैदिक विद्वानों के प्रवचन, शिविर आदि का भी आयोजन किया जाता है। इस समय स्कूल में धर्मशिक्षक न होने से विद्यार्थियों पर वैदिक संस्कारों का प्रभाव अच्छी तरह से नहीं हो पा रहा है। धर्म शिक्षक की योग्यतानुसार उसे उचित मानधन दिया जायेगा एवं उनके निवास का भी उचित प्रबन्ध किया जायेगा। धर्मशिक्षक के साथ पुरोहित का कार्य भी आवश्यक है। धर्मशिक्षक तथा पुरोहित के कार्य को सम्पन्न करने

thearyasamaj.org

योग्य धर्मशिक्षक की आवश्यकता है। सुयोग्य व्यक्ति सम्पर्क करें। **सम्पर्क**- डॉ. मंजुलता विद्यार्थी-०९४२१८३०५६१, डॉ. दिलीप मानकर-०९४२२८६३१२८

७. वार्षिकोत्सव सम्पन्न- आर्यसमाज महर्षि भारद्वाज आश्रम जुवा, बलांगिर, ओडिशा का ४७ वार्षिकोत्सव दि. १७ से १८ जनवरी २०१५ को मनाया गया। इस अवसर पर विश्व शान्ति हेतु यज्ञ का आयोजन किया गया, जिसकी पूर्णाहुति १८ को थी। यह कार्यक्रम आश्रम के अधिष्ठाता स्वामी सामदेव के देखरेख में हुआ। इस कार्यक्रम में आचार्य निलाम्बर, आचार्य सहदेव शास्त्री तथ आचार्य वामदेव और आचार्य कुलमणि (गुरुकुल नवप्रभात, वरगड़) आदि उपदेशक पधारे हुए थे। कार्यक्रम जनसामान्य हेतु था। पौराणिकता, अण्डा-माँस आदि तथा मानव-जीवन के कल्याण आदि विषयों पर प्रवचन हुए। कार्यक्रम में लगभग दो हजार जन समुदाय उपस्थित था।

८. वार्षिक उत्सव मनाया- १३ से १४ जनवरी २०१५ को मकर सौर संक्रान्ति के पावन पर्व पर गुरुकुल प्रभात आश्रम का वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ। १३ जनवरी को स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान के तत्त्वावधान में अखिल भारतीय शोध संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसका विषय 'वैदिक वाङ्मय में देवताओं का स्वरूप' था। पूज्य स्वामी जी के ब्रह्मत्त्व में ५ जनवरी से प्रारब्ध ऋग्वेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति तथा नवप्रविष्ट ब्रह्मचारियों का उपनयन तथा वेदारम्भ संस्कार सम्पन्न हुआ। इसके पश्चात् विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित 'राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा' में कनिष्ठ शोध अध्येतावृत्ति (जे.आर.एफ.) हेतु चयनित गुरुकुल के ४ ब्रह्मचारियों ब्र. रोहित, ब्र. प्रशान्त, ब्र. कुलदीप तथा ब्र. सतीश को सम्मानित किया गया। आर्ष गुरुकुल नोएड़ा में आयोजित अन्तर्गुरुकुलीय व अन्तर्महाविद्यालयीय वेद-विकृति पाठ, श्लोकोच्चारण व व्याख्यानादि प्रतियोगिताओं में गुरुकुल के छात्रों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।

९. वार्षिकोत्सव- आर्ष गुरुकुल दयानन्द वाणी, ग्रा.पो. जरैल, वाया बेनीपही, जि. मधुबनी, बिहार का २०वाँ वार्षिकोत्सव दि. १७ से २१ मार्च २०१५ को मनाया जायेगा। उक्त अवसर पर बुलन्द शहर से स्वामी शिवानन्द, बिजनौर से पण्डित नरेशदत्त, धर्माचार्य सुमन कुमार झा डेरा, आर्यसमाज महरौली एवं बेतिया से भजनोपदेशिका समीक्षा आर्या पधार रहीं हैं। इस अवसर पर आप सभी आर्यजन सादर आमन्त्रित हैं।

चुनाव समाचार

१०. आर्यसमाज लाडनूँ, राजस्थान के चुनाव में **प्रधान**- श्री ओमप्रकाश बागड़ा, **मन्त्री**- श्री सुबोध चन्द्र, **कोषाध्यक्ष**- श्री मालचन्द सैनी को चुना गया।

११. आर्यसमाज मानसरोवर, जयपुर, राजस्थान के चुनाव में **प्रधान**- श्री अर्जुनदेव कालड़ा, **मन्त्री**- श्री सुरेश साहनी, **कोषाध्यक्ष**- श्री ओ.पी. गुप्ता को चुना गया।

१२. आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश पार्ट-।।, नई दिल्ली के चुनाव में **प्रधान**- श्री सहदेव नांगिया, **मन्त्री**- श्री एस.के. कोहली, **कोषाध्यक्ष**- श्री आर.एन. सलूजा को चुना गया।

शोक समाचार

१३. श्री विद्यासागर शास्त्री, अलवर, राजस्थान निवासी का देहावसान दि. ११ जनवरी २०१५ को १०१ वर्ष की शतायु में निधन हो गया। आप लेखक, साहित्यकार एवं अच्छे कवि थे। आप गुरुकुल के स्नातक भी रहे हैं। आपके पुत्र ने ऋषि उद्यान में अनुसन्धान भवन व लेखराम भवन के लिए मार्बल व टाइल्स का सहयोग दिया। आपका परिवार भरापूरा है।

१४. आर्यसमाज के दिग्गज भजनोपदेशक, और साहित्यकार, शान्तिधर्मी पत्रिका के प्रकाशक और प्रधान सम्पादक **पं. चन्द्रभानु आर्य** का २३ दिसम्बर २०१४ को देहावसान हो गया। वे ८५ वर्ष के थे। २४ दिसम्बर को अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न कराया, जिसमें नगर व आसपास के हजारों लोगों ने अन्तिम विदाई दी।

१५. श्रीमती गौरा देवी का निधन ४७ वर्ष की आयु में २५ नवम्बर २०१४ को ब्रेन हेमरेज हो जाने के कारण हो गयी। वे बहुत ही सात्विक विचारधारा एवं धार्मिक भावना वाली थी। वे डॉ. एम.पी. सिंह प्रधान आर्यसमाज सनवाड़, जि. उदयपुर, राजस्थान की धर्मपत्नी थी। उनका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक विधि से हुआ।

१६. आर्यसमाज शास्त्री नगर, मेरठ के प्रधान इं. **श्री राजेन्द्रसिंह वर्मा** की धर्मपत्नी श्रीमती इन्दुबाला वर्मा कई वर्षों से गम्भीर रोगों से पीड़ित होने के कारण दि. ११ दिसम्बर २०१४ को निधन हो गया। उनकी आर्यसमाज, वैदिक धर्म में अटूट आस्था थी। वे प्रख्यात उद्‌भट महारथी की विदुषी पुत्री थी। वे अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गई।

परोपकारी परिवार की ओर हार्दिक श्रद्धाञ्जलि।

thearyasamaj.org

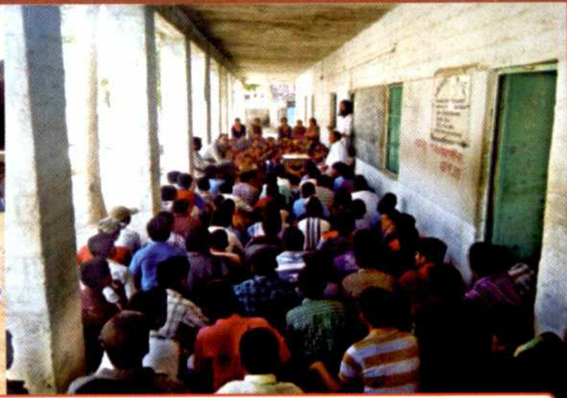

आचार्य सोमदेव, आचार्य कर्मवीर, आचार्य वेदनिष्ठ एवं आचार्य ज्ञानचन्द्र अपने प्रचार कार्यक्रम के दौरान विद्यालयों में छात्रों का मार्गदर्शन करते हुए।

thearyasamaj.org

आर जे/ए जे/80/2015-2017 तक | प्रेषण : १५ फरवरी, २०१५ | ३९५९/५९

ऋषि उद्यान में निर्माणाधीन वाचनालय

प्रेषक:

परोपकारिणी सभा

दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर

(राजस्थान) - ३०५००१